वर्ष 45 ★ अंक 2 ★ फरवरी 2018

हँसती दुनिया

₹15/-

हँसती दुनिया

● वर्ष 45 ● अंक 2 ● फरवरी 2018 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
10. समाचार
18. वर्ग पहेली
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कहानियां

9. प्रेरणा
: पुष्कर द्विवेदी

11. एक लोटा पानी
: श्यामसुन्दर गर्ग

19. टांग का दर्द
: डॉ. बानो सरताज

26. शेर को सबक
: श्यामसुन्दर गर्ग

27. नीलू की जिद्द
: राधेलाल 'नवचक्र'

38. फकीर की निर्लिप्तता
: डॉ. जमनालाल बायती

कविताएं

8. बसंत उपवन में
: गोविन्द भारद्वाज

8. गीत बसंती
: डॉ. घमंडीलाल

17. कछुआ, मछली
: कीर्ति श्रीवास्तव

31. तीन बाल कविताएं
: अंकुश्री

41. राष्ट्रीय पक्षी
: गफूर 'स्नेही'

41. गरूड़
: राधेलाल 'नवचक्र'

47. माता–पिता की सेवा
: कमलसिंह चौहान

विशेष/लेख

6. बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के पावन वचन

16. कहानी पुस्तकों की छपाई की
: कमल सोगानी

23. चौसिंगा
: डॉ. परशुराम शुक्ल

30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमंडीलाल अग्रवाल

32. बिल्लियां, कुछ अनूठी
: दिनेश दर्पण

42. बातें समन्दर की रानी की
: जयेन्द्र

उचित आचरण

एक बार एक अध्यापक अपनी कक्षा में गये और उन्होंने एक बच्चे को पास बुलाया और कुछ प्रश्न पूछे। प्रश्न इस प्रकार थे–

- क्या हमें चोरी करनी चाहिए?
- क्या हमें ईर्ष्या करनी चाहिए?
- क्या हमें किसी का अपमान करना चाहिए?
- क्या हमें किसी को धोखा देना चाहिए?

उस बच्चे ने सभी प्रश्नों का उत्तर 'न' में दिया। इसी प्रकार उस अध्यापक ने सभी बच्चों को बारी–बारी से अपने पास बुलाया और यही प्रश्न सभी बच्चों से पूछे। बच्चों के उत्तर से अध्यापक प्रसन्न भी हुए और हैरान भी, क्योंकि सभी बच्चों ने प्रश्नों के उत्तर 'न' में ही दिए।

अध्यापक प्रसन्न इसलिए थे कि आज के बच्चे नैतिक और सामाजिक जीवन के नियमों को कितनी अच्छी तरह से जानते हैं और हैरान इसलिए थे कि इन सभी नियमों और आचरण की जानकारी के बावजूद भी कुछ बच्चों की जीवनशैली भिन्न देखने को मिलती है।

बच्चे जीवन में वही कुछ अपनाते हैं जिसे वे अपने आस–पास होते देखते हैं। उनके लिए वही प्रेरणा और आचरण का सिद्धान्त बन जाता है जिसे वे बड़े होने पर चाह कर भी बदल नहीं पाते। इसलिए हम सभी बड़ों का यह कर्तव्य बनता है कि हम बच्चों के सामने वही कार्य करें जिनकी हम बच्चों से अपेक्षा करते हैं। हम स्वयं बच्चों के सामने झूठ नहीं बोलेंगे तो बच्चे हमेशा सत्य ही बोलेंगे। हम बड़े किसी की निन्दा, ईर्ष्या नहीं करेंगे तो बच्चे भी किसी की निंदा, ईर्ष्या नहीं करेंगे और वे सब का सम्मान करेंगे।

एक बात हमेशा स्मरण रहनी चाहिए कि अगर हम बच्चों को मालूम है कि क्या ठीक है और क्या गलत, तो फिर हम बच्चों का यह कर्तव्य बनता है कि केवल उचित कार्य ही करें न कि अनुचित कार्यों का अनुसरण। हमें जिन्दगी में केवल ऐसे ही कार्य करने चाहिएं जिससे हमें समाज में ही नहीं बल्कि स्वयं की नज़रों में भी कभी शर्मिन्दा न होना पड़े।

– **विमलेश आहूजा**

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 163

जोबन अते जवानी तक के माया विच गलतान ओ बन्दे।
महल माड़ियां उच्चियां तक के क्यों करनां एं शान ओ बन्दे।
इक फूक विच फुलया एं तूं भुल्ल ना अपणी जान ओ बन्दे।
पंजां विच फसा के पंजे विसर गयों भगवान ओ बन्दे।
कोल खलौते तेरा दाता रमज़ गुरु तों पावेंगा।
कहे अवतार सुणो रे सन्तो जीवन मुक्त हो जावेंगा।

भावार्थ :

बाबा अवतार सिंह जी सम्पूर्ण अवतार बाणी के इस पद में जीवन मुक्ति की बात समझाते हुए कह रहे हैं कि युवावस्था के रूप में मानव के सामने माया का जो रूप नजर आता है, बंदे तू इसमें ही डूबा हुआ है। तू अपने महल–माड़ियों को ही जीवन की शान माने बैठा है। मानव तू आती–जाती सांसों की फूंक में फूला हुआ है। तुझे इनमें फंसकर जीवन की वास्तविकता को नहीं भूल जाना चाहिए।

इन्सान को सचेत करते हुए कह रहे हैं कि इन्सान तू काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इन पाँचों विकारों के पंजे में उलझकर रह गया है और जिसे हमेशा याद रखना चाहिए ऐसे परमात्मा को भूल गया है।

बाबा अवतार सिंह जी मानव को इन विकारों से मुक्त होने और इन समस्याओं का सुन्दर समाधान प्रस्तुत करते हुए कह रहे हैं कि तेरा दातार–प्रभु तेरे समीप ही खड़ा है लेकिन तू इसकी सार सद्गुरु से ही पा सकता है, अन्य किन्हीं उपायों से नहीं। अगर तू सद्गुरु की शरण में आ जायेगा तो तू गुरुकृपा से निराकार–प्रभु के दर्शन पाकर जीवन मुक्त हो जाएगा। मुक्ति मृत्यु के बाद ही हो, ऐसा नहीं है। तू इस प्रभु–परमात्मा की जानकारी प्राप्त कर लेगा तो जीते जी ही जीवन मुक्त हो जाएगा अर्थात् अपने जीवन का परम लक्ष्य प्राप्त कर लेगा।

हरदेव बाणी सार

गुरु कृपा से निरंकार को जिस जन ने भी जाना है।
कहे 'हरदेव' उसी जन ने ही धन्य इसी को माना है।

इस ठहरे दातार प्रभु का जो भी करता ध्यान है।
कहे 'हरदेव' जहां में ठहरा हुआ वही इन्सान है।

निरंकार के भय में रहता जो जन इसको जान कर।
कहे 'हरदेव' कर्म वो करता साक्षी इसको मान कर।

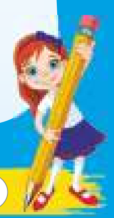

बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के पावन वचन

★ परमपिता परमात्मा को जानकर ही विश्व–शान्ति सम्भव है। महापुरुषों, गुरुओं, अवतारों के पदचिन्हों पर चलकर ही कल्याण सम्भव है। मानवता को अध्यात्मिकता से ही बचाया जा सकता है।

★ ब्रह्मज्ञान प्राप्त किये बिना भक्ति आरम्भ नहीं होती है।

★ महत्वपूर्ण होना अच्छा है, लेकिन अच्छा होना ज्यादा महत्वपूर्ण है

★ किसी भाव के प्रवाह को कटाक्ष से समाप्त न करना अहिंसा है। प्राण ले लेना और विचारों का इस हद तक विरोध करना कि दिल टूट जाये हिंसा है।

★ सदा एक सा रहने वाला अर्थात् अपरिवर्तनीय पक्ष 'सत्य' है। इसीलिए केवल निराकार प्रभु को ही सत्य कहा जाता है।

★ सबके साथ यथोचित सार्थक सम्बन्ध मिलवर्तन कहलाते हैं।

★ इस प्रभु का नाम मन के सभी रोगों की औषधि है। जितना इन्सान का नाता इस निरंकार से जुड़ता जाता है, उतना ही मन निरोगी होता जाता है।

★ ऐ इन्सान! अगर तू स्वयं को नास्तिकों में समझ रहा है तो तुझे वास्तविक धर्म को जानना होगा और उसका पालन करना होगा।

★ ईश्वर को सीमाओं में बांध लेना मनुष्य की अज्ञानता का प्रमाण है।

★ तिनके को भी कभी छोटा नहीं समझना चाहिए क्योंकि हवा के झोंके से अगर वह आंख में जा पड़े तो इन्सान को बेचैन कर देता है।

★ दुर्गुणों को त्याग कर, सद्गुणों से युक्त होकर जो आपको मानवता के रास्ते पर लगा देता है, वही तुम्हारा सच्चा साथी है।

★ प्रेम एक ऐसी शक्ति है जो किसी भी आत्मा को जीत सकती है।

★ अगर आप किसी को जीतना चाहते हो तो बुराईयों को जीतो।

★ मानव की हत्या करना किसी भी धर्मगुरु, पीर–पैगम्बर की शिक्षा नहीं रही। धर्म तो जोड़ना सिखाता है इसलिए निरीह नागरिकों की हत्या किसी प्रकार धार्मिक कृत्य नहीं हो सकता।

★ जीवन को हानि पहुँचाकर मानव किसी को भी लाभ नहीं पहुँचा सकता बल्कि स्वयं उसे भी अनेकों प्रकार के नुकसान उठाने पडेंगे।

★ हँसना जीवन की अमूल्य निधि है। लेकिन याद रखो किसी की कमजोरी पर हँसना कायरता की निशानी है।

★ धरती को स्वर्ग बनाने का एक ही तरीका है; इन्सान को इन्सानी फितरत से युक्त होना जरूरी है।

★ सहनशीलता कमजोरी नहीं बल्कि शक्ति का सूचक है।

☆ भक्त एक खिले फूल की भाँति होता है और भक्ति उसकी महक है।

☆ इन्सानों से समाज बनता है। इन्सान सुधरेगा तो समाज सुधरेगा।

☆ नामधन के चाहवान विरले ही होते हैं और जो विरले होते हैं वहीं महान होते हैं।

☆ भक्तजन समर्पित करके भी भरपूर रहते हैं और संसार छीन कर भी खाली रहता है।

☆ अंधकार और प्रकाश की भाँति अभिमान और ज्ञान भी इकट्ठे नहीं हो पाते।

☆ सूरज की रोशनी का लाभ वही लेता है जिसकी आँखें हैं।

☆ एक सच्चा भक्त सत्य को अपना कर इन्सानियत की बुलन्दियों तक पहुँच जाता है।

☆ अज्ञानी सदा सोये रहते हैं और ज्ञानी सदा जागते रहते हैं।

☆ आज का जो कार्य करना है उसे हम आज ही करेंगे तो समझो हम बुद्धिमान हैं।

☆ लोभ से बुद्धि नष्ट होती है, बुद्धि नष्ट होने से लज्जा, लज्जा नष्ट होने से धर्म तथा धर्म नष्ट होने से मनुष्य का सर्वत्र नष्ट हो जाता है।

☆ स्वार्थ में अच्छाइयां ऐसे खो जाती हैं जैसे समुद्र में नदियां।

☆ हम महापुरुषों का नाम लेते हैं। उनकी पूजा करते हैं। हम उनको मानने तक सीमित न रहकर उनकी बात भी मानें।

संग्रहकर्ता : रीटा, (दिल्ली)

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

बसंत उपवन में

ऋतु बसंत की बहार छाई उपवन में,
हरियाली ने दुकान सजाई उपवन में।

मौसम ने भी बदला है चोला अपना,
फूलों ने खुशबू बिखराई उपवन में।

कल तक सारे ठूंठ खड़े थे पेड़ों के,
अब पत्तों की छटा मुस्काई उपवन में।

धुंध की बारिश होती रही रातों में,
शबनम में कलियां नहाई उपवन में।

झूम रहा है भौंरा मस्ती में कितना,
सरसों फूली नहीं समाई उपवन में।

रंग–रंग से धरती ने किया श्रृंगार,
अभिनन्दन में कोयल गाई उपवन में।

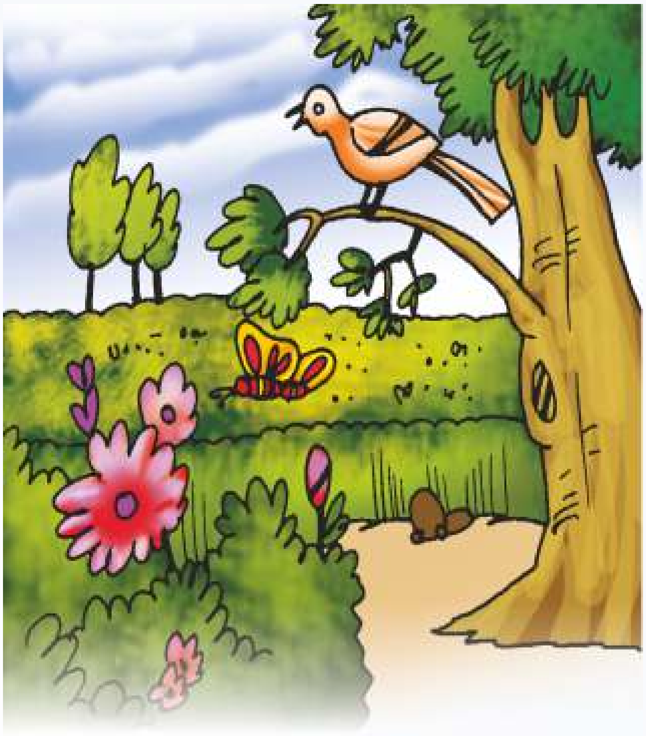

बाल कविता : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

गीत बसंती

फूली सरसों पीली–पीली,
धरती लगती छैल–छबीली।

गूंज रहे हैं मधु–स्वर पल–पल,
बैठ डाल पर गाती कोयल।

फूट पड़ी है डाली–डाली,
सेज सजी है खुशियों वाली।

पीले–पीले बसन पहन कर,
हँसते हैं अब सब नारी–नर।

आओ बच्चो धूम मचाएं,
गीत बसंती मिलजुल गाएं।

प्रेरणा

राजू दरवाजे की दहलीज पर आकर बैठ गया। उदास! हताश!! उसकी वार्षिक परीक्षा निकट थी। वह बहुत घबरा रहा था। उसका मन परीक्षा के प्रति निराश हो रहा था। वह सोचने लगा था– कैसे पास होऊंगा। क्या करूं? पास होने की कोई सूरत नहीं दिखती।

राजू अपनी तिमाही और छमाही परीक्षाओं में दो–दो विषयों में फेल था। गणित और अंग्रेजी में वह कमजोर था।

वह सोचने लगा कि सातवीं कक्षा पार कर आठवीं में कैसे आ पायेगा? इधर पापा ने चेतावनी दे दी– यदि तू पास नहीं हुआ तो खेलना बन्द। दोस्तों से मिलना, घूमना–फिरना बन्द।

फिर सबसे बड़ा दुख तो राजू को यह हो रहा था कि यदि वह पास नहीं हुआ तो उसके पापा गर्मी की छुट्टियों में उसे नैनीताल और मसूरी नहीं ले जायेंगे। यह सोचकर वह बड़ा दुखी हो उठा था।

तभी उसने निगाह नीची कर एक गहरी सांस छोड़ी। यकायक उसकी नजर एक चींटी पर पड़ी जो एक बड़े से मृत झींगुर को खींचती हुई दरवाजे की दहलीज पर चढ़ रही थी। परन्तु चींटी बार–बार गिर जाती थी। राजू अपलक उस चींटी को देखने लगा। नन्हीं–सी चींटी अपने से कई गुना भारी झींगुर को घसीटती हुई दहलीज पर से दो बार गिर चुकी थी परन्तु तीसरी बार चींटी दहलीज पर चढ़ने में सफल हुई। राजू उसकी मेहनत और सफलता पर मन ही मन प्रसन्न हुआ।

सहसा राजू के मन में विचार उठा– यदि नन्हीं–सी चींटी इतने बड़े झींगुर को लेकर प्रयत्न और परिश्रम करके दहलीज पर चढ़ सकती है तो वह भी परिश्रम और मेहनत से पढ़कर वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकता है। इस प्रकार वह पापा को प्रसन्न कर सकता है और पापा की प्रसन्नता के सहारे अपनी हर इच्छा पूर्ण कर सकता है। राजू मन ही मन झूम उठा और तेजी से अपने कमरे में पढ़ने के लिए चल दिया, जहाँ पुस्तकें उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं।

3.48 अरब साल पुरानी चट्टान में मिला जमीन पर जीवन होने का सबसे पुराना चिह्न

मेलबर्न। वैज्ञानिकों ने जमीन पर जीवन होने के सबसे शुरुआती प्रमाण का पता 3.48 अरब साल पुराने गर्म चश्मे की तलछट से लगाए जाने का दावा करते हुए कहा है कि जमीन पर जीवन के पैदा होने का जो समय सोचा गया है, यह उससे भी 58 करोड़ साल पुराना है।

शोधकताओं के अनुसार यह खोज क्रमिक विकास पर जारी बहसों को सुलझाने में मदद करेगी। दरअसल जीवन की उत्पत्ति के बारे में यह बहस चलती आ रही है कि यह छोटे, स्थलीय तालाबों में हुई है या फिर गहरे समुद्र में। इससे पहले जमीन पर सूक्ष्मजीव के उत्पत्ति होने की समय–सीमा दक्षिण अफ्रीका में 2.7–2.9 अरब वर्ष पुराने तलछट में बताई जाती है।

दक्षिण अफ्रीका की जैविक समृद्ध मिट्टी में मिले तलछट से यह अनुमान लगाया गया था। न्यू साउथ वेल्स (यूएनएसडब्ल्यू) के वैज्ञानिकों ने अब 3.48 अरब साल पुराने चश्मे के तलछट से जीवाश्म बरामद किए हैं। यह पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के पिलबारा क्षेत्र में स्थित है। इससे जमीन पर सूक्ष्मजीव के ज्ञात समय को 58 करोड़ साल पीछे भेज दिया है। (भाषा)

दुनिया का सबसे ऊष्मा प्रतिरोधी पदार्थ मिला

लंदन। वैज्ञानिकों ने ऐसे पदार्थ की पहचान कर ली है, जो लगभग 4000 डिग्री सेल्सियस के तापमान को सहन कर सकता है। यह खोज बेहद तेज हाइपरसोनिक अंतरिक्ष वाहनों के लिए बेहतर ऊष्मा प्रतिरोधी कवच बनाने का रास्ता खोल सकती है।

ब्रिटेन के इंपीरियल कॉलेज लंदन के शोधकर्ताओं ने खोज की है कि हैफ्नियम कार्बाइड का गलनांक अब तक दर्ज किसी भी पदार्थ के गलनांक से ज्यादा है। टैंटेलम कार्बाइड और हैफ्नियम कार्बाइड 'रीफ्रेक्ट्री सीरेमिक्स' हैं, इसका अर्थ यह है कि यह असाधारण रूप से ऊष्मा के प्रतिरोधी हैं। अत्यधिक ऊष्मा को सहन कर सकने की इनकी क्षमता का अर्थ यह है कि इनका इस्तेमाल तेज गति के वाहनों में ऊष्मीय सुरक्षा प्रणाली में और परमाणु रिएक्टर के बेहद गर्म पर्यावरण में ईंधन के आवरण के रूप में किया जा सकता है। इन दोनों ही यौगिकों के गलनांक के परीक्षण प्रयोगशाला में करने के लिए प्रौद्योगिकी उपलब्ध नहीं थी। ऐसे परीक्षण से यह देखा जा सकता है कि यह कितने अधिक गर्म पर्यावरण में काम कर सकते हैं। शोधकर्ताओं ने इन दोनों यौगिकों की गर्मी सहन कर सकने की क्षमता के परीक्षण के लिए लेजर का इस्तेमाल करके तेज गर्मी पैदा करने वाली एक नई प्रौद्योगिकी विकसित की है। उन्होंने पाया कि यदि इन दोनों यौगिकों को मिश्रित कर दिया जाए तो उनका गलनांक 3905 डिग्री सेल्सियस था। लेकिन दोनों यौगिकों को अलग–अलग गर्म किए जाने पर उनके गलनांक अब तक ज्ञात पदार्थों के गलनांक से ज्यादा पाए गए। टैंटेलम कार्बाइड 3768 डिग्री सेल्सियस पर गल गया जबकि हैफ्नियम कार्बाइड का गलनांक 3958 डिग्री सेल्सियस था। यह निष्कर्ष नई पीढ़ी के हाइपरसोनिक वाहनों, यानी अब तक के सबसे तेज अंतरिक्षयानों के लिए मार्ग प्रशस्त कर सकता है। (भाषा)

– संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

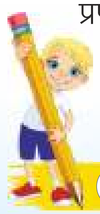

प्रेरक–प्रसंग : श्यामसुन्दर गर्ग

एक लोटा पानी

एक दिन राजा वन विहार को निकला। मार्ग में वह प्यास से छटपटाने लगा। जंगल में एक अंधे व्यक्ति की झोंपड़ी के बाहर पानी का एक मटका रखा दिखाई दिया तो राजा ने एक सिपाही को पानी लाने का आदेश दिया। सिपाही ने अंधे व्यक्ति से कहा– ''ओ अंधे, एक लोटा पानी दे।''

अंधे व्यक्ति ने कहा, ''जा, जा तेरे जैसे सिपाहियों को मैं पानी नहीं पिलाता।'' इसके बाद राजा ने सेनापति को पानी लाने के लिए भेजा। सेनापति ने कहा, ''ओ नेत्रहीन एक लोटा पानी दे, बहुत प्यास लगी है।''

अंधे ने कहा– ''क्षमा कीजिए सेनापति जी, मैं आपको पानी नहीं पिला सकता।''

सेनापति भी बिना पानी लिए लौट आया। अन्त में राजा ने स्वयं पानी लाने का निश्चय किया। सबसे पहले राजा ने अंधे व्यक्ति को नमस्कार किया और कहा, ''महात्मा, प्यास के मारे कंठ सूख रहा है, यदि आप एक लोटा जल दे सके तो बड़ी ही कृपा होगी।''

अंधे ने राजा को सत्कारपूर्वक बैठाया और कहा, ''आप जैसे श्रेष्ठजन का राजा जैसा आदर है। जल से क्या, मेरा शरीर भी आपके स्वागत के लिए उपस्थित है, कोई अन्य सेवा हो तो बताएं।''

राजा ने शीतल जल से प्यास बुझाई और नम्रतापूर्वक पूछा, ''आप तो देख नहीं सकते फिर भी आपने सिपाही, सेनापति और राजा को कैसे पहचाना?''

अंधे व्यक्ति ने कहा, ''वाणी के व्यवहार से हर व्यक्ति के वास्तविक स्तर का पता चल जाता है।

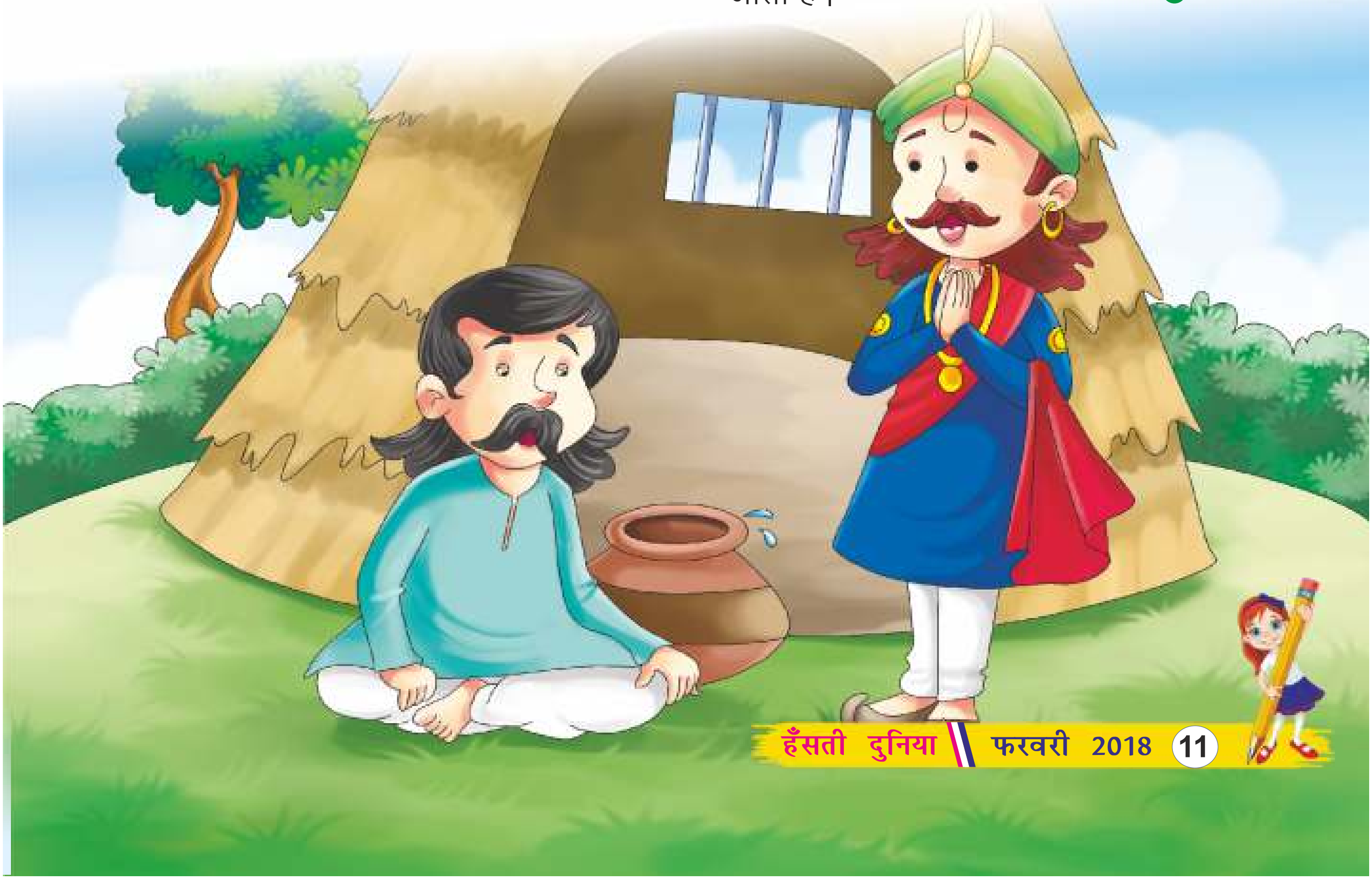

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

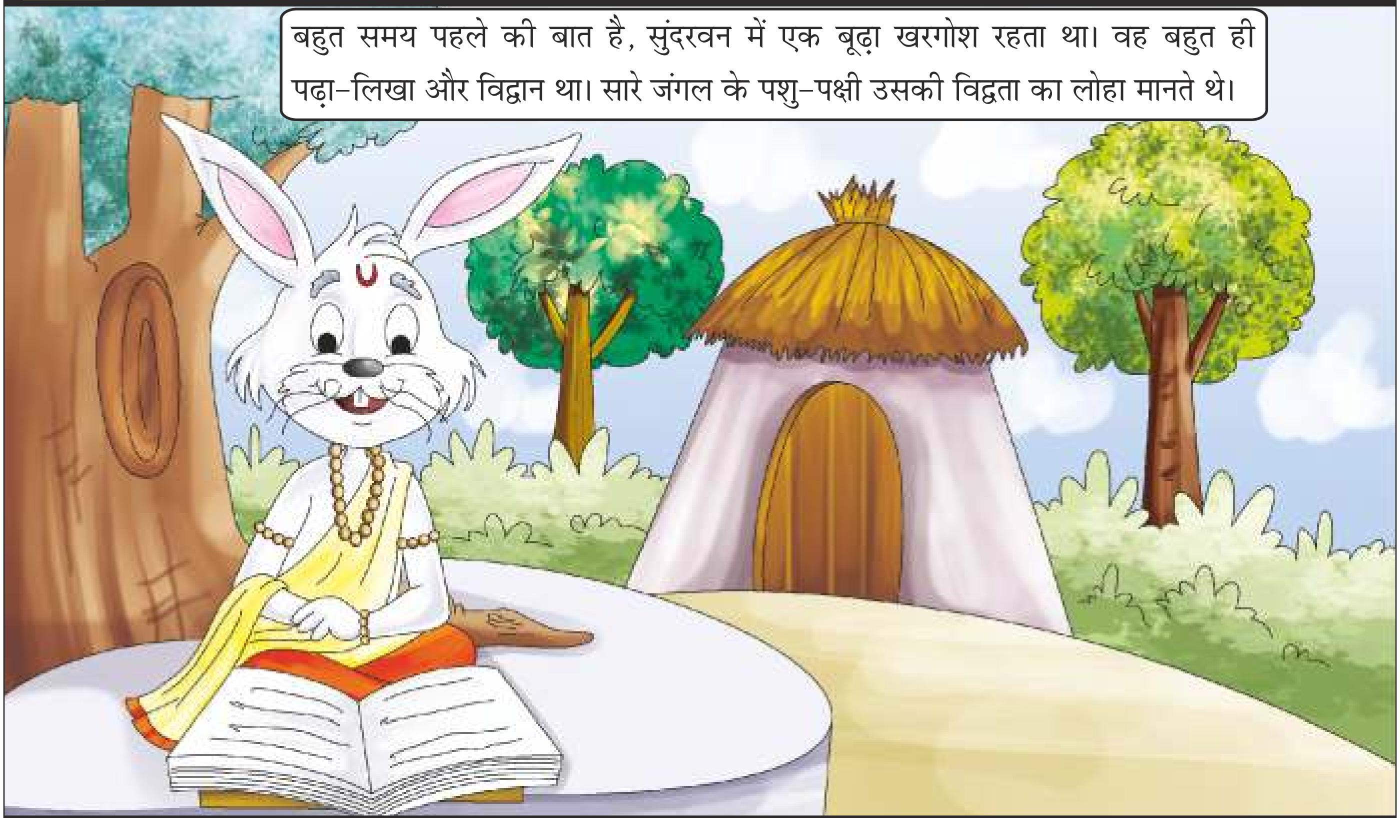

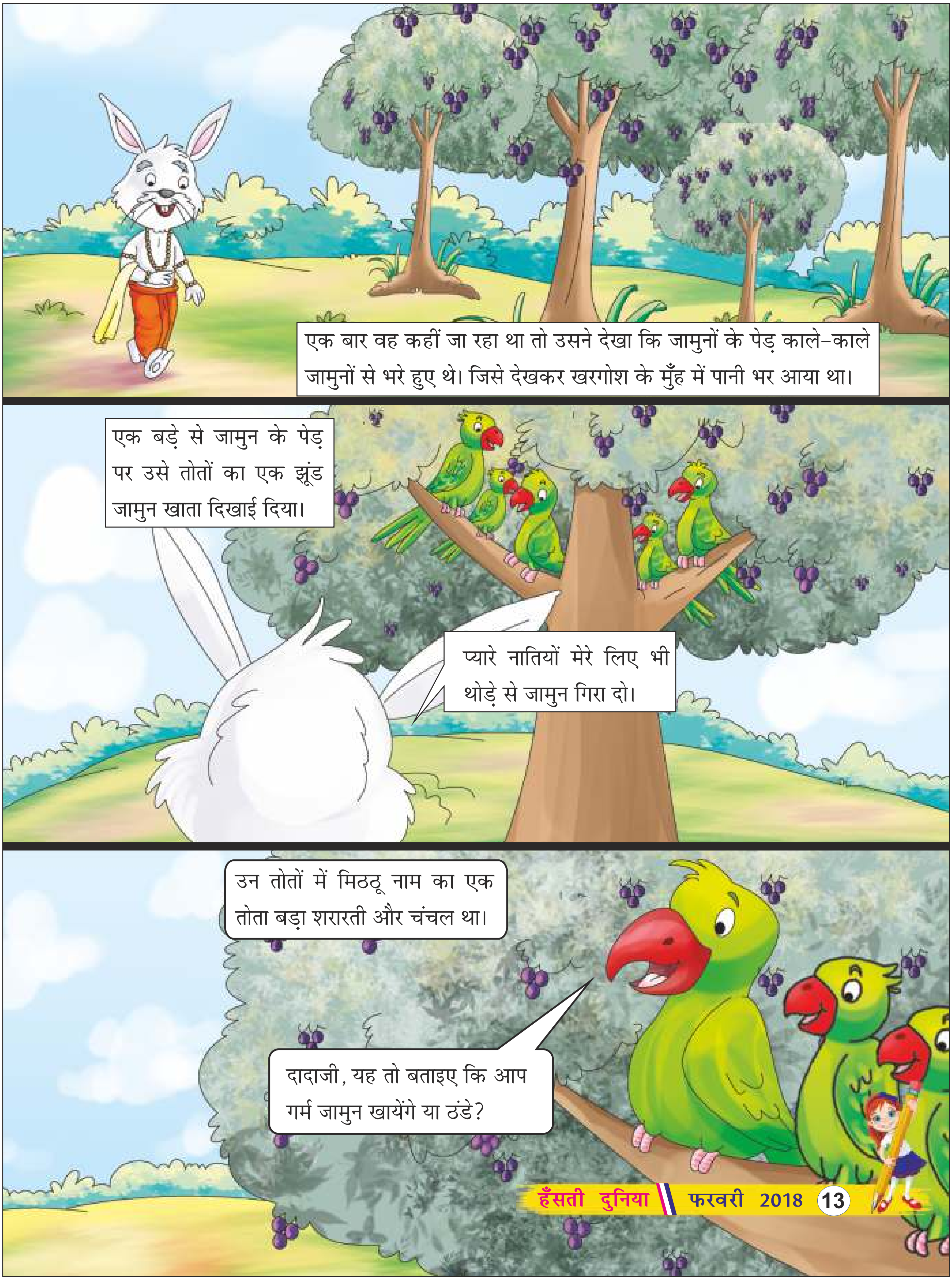
एक बार वह कहीं जा रहा था तो उसने देखा कि जामुनों के पेड़ काले-काले जामुनों से भरे हुए थे। जिसे देखकर खरगोश के मुँह में पानी भर आया था।
एक बड़े से जामुन के पेड़ पर उसे तोतों का एक झूंड जामुन खाता दिखाई दिया।
प्यारे नातियों मेरे लिए भी थोड़े से जामुन गिरा दो।
उन तोतों में मिठठू नाम का एक तोता बड़ा शरारती और चंचल था।
दादाजी, यह तो बताइए कि आप गर्म जामुन खायेंगे या ठंडे?

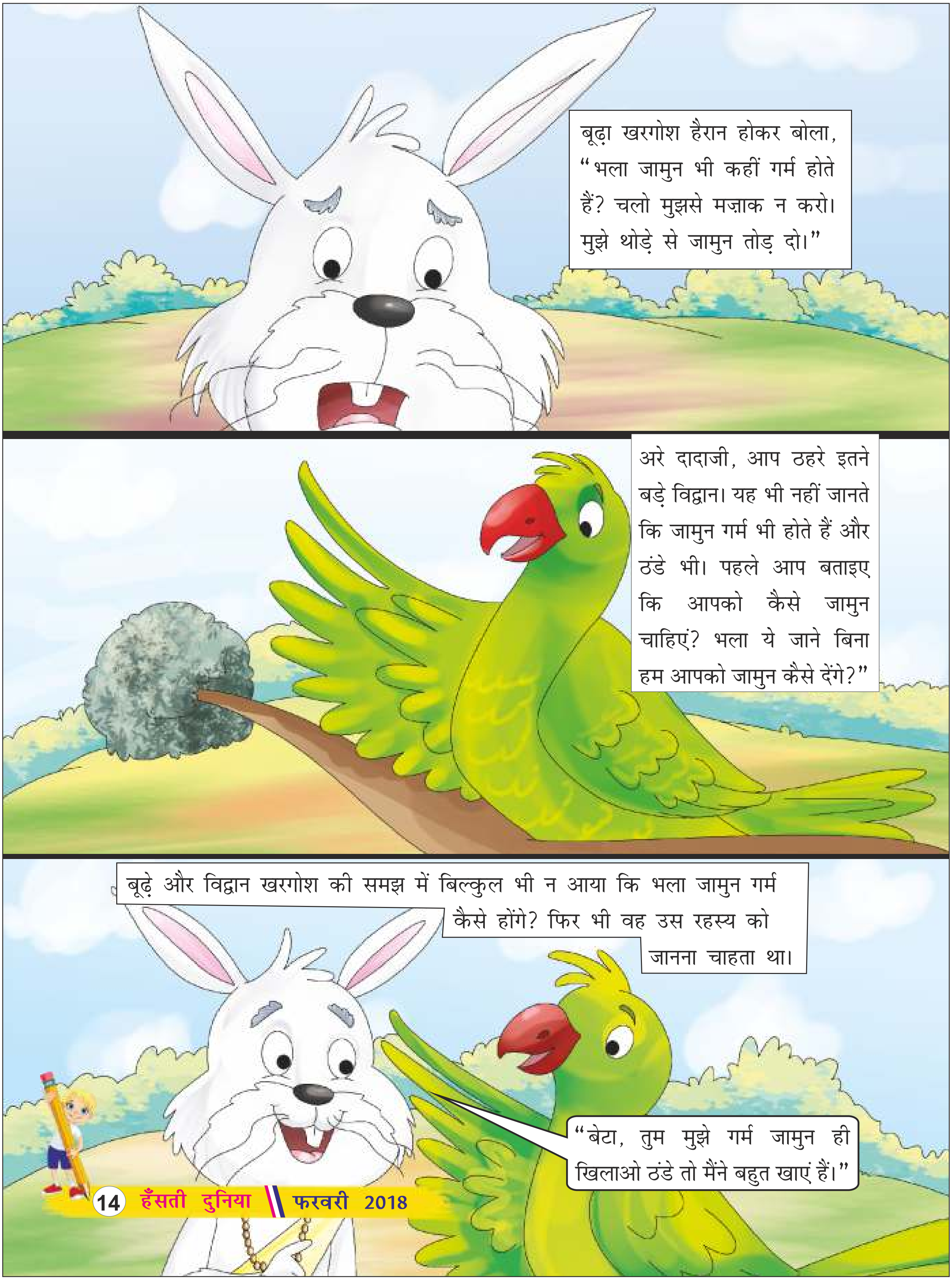
बूढ़ा खरगोश हैरान होकर बोला, "भला जामुन भी कहीं गर्म होते हैं? चलो मुझसे मज़ाक न करो। मुझे थोड़े से जामुन तोड़ दो।"
अरे दादाजी, आप ठहरे इतने बड़े विद्वान। यह भी नहीं जानते कि जामुन गर्म भी होते हैं और ठंडे भी। पहले आप बताइए कि आपको कैसे जामुन चाहिएं? भला ये जाने बिना हम आपको जामुन कैसे देंगे?"
बूढ़े और विद्वान खरगोश की समझ में बिल्कुल भी न आया कि भला जामुन गर्म कैसे होंगे? फिर भी वह उस रहस्य को जानना चाहता था।
"बेटा, तुम मुझे गर्म जामुन ही खिलाओ ठंडे तो मैंने बहुत खाएं हैं।"

नन्हें मिठ्ठू ने बूढ़े खरगोश की यह बात सुनकर जामुन की एक डाली को ज़ोर से हिलाया। पके-पके ढेर से जामुन नीचे धूल में बिछ गए। बूढ़ा खरगोश उन्हें उठाकर फूंक मार कर खाने लगा।
बेटा? ये तो साधारण ठंडे जामुन ही हैं।"
"क्या कहा ठंडे हैं? तो फिर आप इन्हें फूंक-फूंक कर क्यों खा रहे हैं? इस तरह तो सिर्फ़ गर्म चीज़ें ही खाई जाती हैं।"
मिठठू तोते की बात का रहस्य बूढ़े खरगोश की समझ में आ गया और वह बड़ा शर्मिंदा हुआ। उसका घमंड दूर हो गया।

आलेख : कमल सोगानी

कहानी पुस्तकों की छपाई की

आज के आधुनिक दौर में तो आधुनिक प्रिंटिंग प्रेस से मनचाही रंग–बिरंगी पुस्तकें आसानी से छप जाती हैं। ये पुस्तकें बड़ी मनमोहक सुन्दर भी होती हैं, लेकिन एक जमाना ऐसा भी था, जब पुस्तकों की छपाई के लिए मशीनों का आविष्कार नहीं हुआ था, तब इन्हें हाथों से ही लिखकर तैयार किया जाता था। इन पुस्तकों को तैयार करने में कई–कई दिन लग जाया करते थे। छपाई की शुरुआत कब कैसे हुई? इसका तो आज तक कोई ठोस प्रमाण नहीं मिला। इतिहास सूत्रों से विदित होता है– चीन में एक व्यक्ति था 'वागचिक' जिसने लकड़ी के ठप्पे बनाकर सबसे पहले किताब 'हीरक सूत्र' सन् 867 ई. में छापी, लेकिन इसकी लिखावट घिसकर जल्दी ही मिट जाती थी। इसलिए कई बुद्धिमान लोगों का ध्यान लोहे के ठप्पे की ओर गया। कई बुद्धिमान लोगों ने अपनी कल्पना के मुताबिक लोहे के अलग–अलग ठप्पे बनाये थे।

13वीं सदी के प्रथम चरण में नि ओ चि.चि नामक एक चीनी व्यक्ति ने मिट्टी और धातु की टाइप अक्षर बनाये। इसके बाद कोरिया के राजा ने धातु टाइप बनाने की एक फैक्ट्री लगायी। इस फैक्ट्री से बने ठप्पे से एक पुस्तक छापी गयी। धीरे–धीरे ये कला यूरोप पहुँची। जहाँ पर जर्मनी देश के 'जॉन गुटेनबर्ग' नाम के व्यक्ति ने धातु टाइप बनाये। उसने 1455 ई. में बाइबिल छापी।

पहले तो लैटिन भाषा ही चलती थी। उसी में किताबें छापी गईं। फिर इंग्लैंड देश में विलियम केक्सटन ने अंग्रेजी भाषा में एक पुस्तक छापी।

15वीं सदी के मध्य में हमारे देश में भी छपाई की मशीनें विदेशों से आईं। हमारे देश में पहली किताब मलयालम, तमिल में छपी।

चार्ल्स विल्किंस ने भगवदगीता और अभिज्ञानशाकुंतलम को अंग्रेजी में छपवाया। फिर कालीदास का ऋतुसंहार कोलकाता में देवनागरी लिपि में छापी गई।

मुम्बई में भीमजी ने सबसे पहले छापाखाना लगाने का प्रयत्न किया। उन्होंने इंग्लैंड से मशीनें मंगवाईं। पश्चिमी भाग में भारतीय भाषा हिन्दी का पहला छापाखाना 13 जुलाई 1811 ई. में लगा, जिसमें 'मराठी पंचाग' नामक पुस्तक छपी। सन् 1816 ई. में अमेरिकन मिशन प्रेस लगाया गया। इसी तरह 1864 ई. में निर्णय सागर प्रेस के मालिक जावजी दादाजी ने भारत प्रसिद्ध फाउण्ड्री प्रेस लगाया था। धीरे–धीरे छपाई की मशीनों में कई तरह के बदलाव आये। आज की दुनिया में तो बेहतरीन छपाई की कंप्यूटराइज्ड, एक से एक उम्दा मशीनें उपलब्ध हैं।

दो बाल कविताएं : कीर्ति श्रीवास्तव

कछुआ

कछुआ सीधा–साधा है,
लगता सबको प्यारा है।
कभी पानी में रहता
तो कभी बाहर आता है।

चलता धीमी चाल है,
पर बुद्धि तेज चलाता है।
शरारत दिमाग में आ जाए तो,
गर्दन, पांव छुपाता है।

जान बचाने की खातिर,
पत्थर–सा बन जाता है।
नुकसान नहीं पहुँचाता किसी को,
दोस्त सभी का बन जाता है।

मछली

चुपके–चुपके, हौले–हौले,
मछली आई पानी डोले।
रंग–बिरंगी है मतवारी,
दाने को मुँह में छुपाती।

कभी अकेली, कभी झुंड में,
मस्ती से है तैर लगाती।
सखियों संग खेल–खेल में,
लहरों संग है लहराती।

आँखों में शरारत लिये,
सबको धोखा देने के लिए।
जल की रानी,
जल में छिप जाती।

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

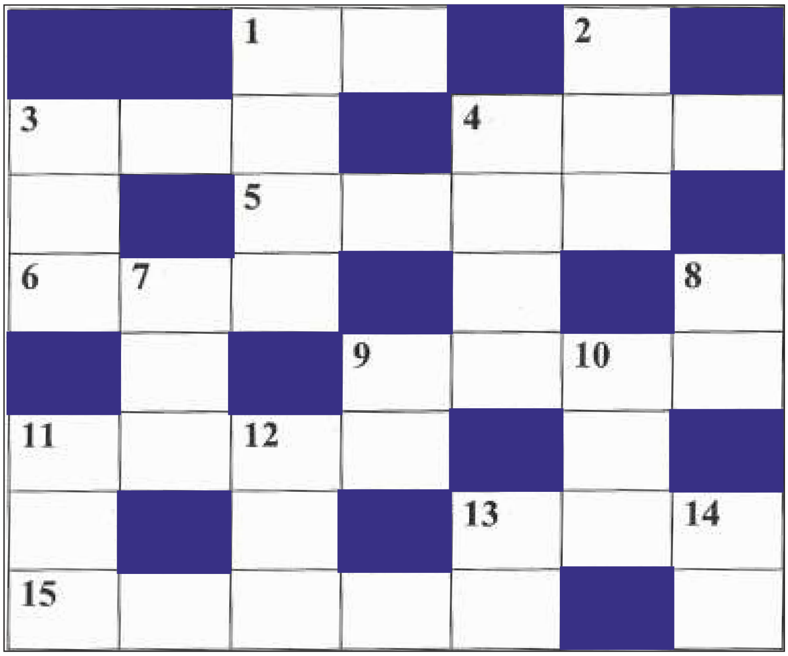

बाएं से दाएं

1. शुद्ध शब्द छांटिए : इच्छा/ईच्छा।
3. अध्यापक का एक पर्यायवाची शब्द।
4. विभीषण से पहले लंका का राजा .... था।
5. चावल की एक किस्म का नाम।
6. भगवान श्रीकृष्ण का बचपन जिस गाँव में बीता था।
9. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का पुराना नाम।
11. संहार नहीं, श्रृंगार करें। अपकार नहीं, ... करें।
13. महाभारत में राजा पांडु के पुत्रों को . .... कहते हैं।
15. भारतीय राज्य जिसकी राजधानी का पुराना नाम मद्रास था।

ऊपर से नीचे

1. 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' के लेखक मोहम्मद .... थे।
2. बलराम की पत्नी का नाम (अहिल्या/रेवती)।
3. स्वामी विवेकानन्द ने 1893 में जिस अमेरिकी शहर में 'विश्व धर्म संसद' को सम्बोधित किया था।
4. रामचरितमानस के लेखक तुलसीदास के बचपन का नाम।
7. सुन्दर का विपरीत शब्द।
8. मामा की माता।
9. 'परोपकार' शब्द में जिस वाहन का नाम छुपा है।
10. इंग्लैंड की मुद्रा का नाम।
11. सन् 2016 में रघुराम राजन के बाद .... पटेल भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर बने।
12. इस पंक्ति में छुपी एक एशियाई देश की राजधानी ढूंढिए : जीवन क्या है, पानी का बुलबुला है
13. पांडवों के पिता का नाम।
14. वर शब्द का स्त्रीलिंग।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

रोचक कहानी : डॉ. बानो सरताज

टांग का दर्द

बदलू बन्दर शहर से डॉक्टरी पढ़कर आया और काननवन में क्लीनिक खोल लिया। आम के एक घने वृक्ष के नीचे शेड बनाया गया। पीछे के भाग में बाबू कम्पाउंडर की देख–रेख में एक खरगोशनी और एक हिरनी औषधियां कूटती–पिसतीं। सामने प्रतीक्षा–कक्ष था। मध्य में डॉ. बदलू टेबल–कुर्सी लगाकर बैठते।

शीघ्र ही क्लीनिक खुलने की खबर जंगल में फैल गई। रोगी आने लगे। पहले ही दिन एक कनखजूरा सबसे पहले पहुँचा। बदलू बन्दर 'मैटेरिया मेडिका' पुस्तक में दृष्टि गड़ाए बैठे थे। रोगी की ओर देखे बिना बोले, ''टेबल पर लेट जाओ।''

कनखजूरा टेबल के एक पाँव पर से ऊपर चढ़ने लगा तो बाबू कम्पाउंडर खीजकर बोला, इस प्रकार चढ़ने में एक वर्ष लगा दोगे। आओ, इस कागज पर आ जाओ।

कागज़ पर लेकर बाबू ने कनखजूरे को टेबल पर रख दिया। डॉ. बदलू उठकर आए।

पूछा, ''क्या तकलीफ है?''

कनखजूरे ने कहा, ''टांग में दर्द है।''

''कौन सी टांग में?''

''कौन सी टांग में दर्द है, मेरी ही समझ में नहीं आ रहा है।'' कनखजूरे ने सकुचाते हुए कहा।

''मैं देखता हूँ... दायीं ओर दर्द है या बायीं ओर?''

''श...श...शायद दायीं ओर की टांग में है।''

डॉ. बदलू ने नर्मी से कहा, ''अच्छा तो एक–एक टांग हिलाओ और बताओ कि दर्द देने वाली टांग कौन–सी है?''

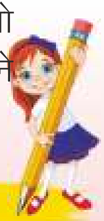

कनखजूरा बोला, ''मैं प्रयत्न कर चुका हूँ। नहीं जान पाया कि कौन–सी टांग है? आप तो डॉक्टर हैं, आप ही पता लगाकर इलाज कर दें।''

''क्या कहा?'' डॉ. बदलू आँखें निकालकर बोले, ''555 टांगें हैं तुम्हारी। प्रत्येक टांग हिलाता रहूँगा तो दूसरे रोगियों को कब देखूंगा।''

''555 टांगें तो नहीं हैं मेरी।'' कनखजूरा बुरा मानकर बोला। ''266 हैं सिर्फ।''

''266 सिर्फ होती हैं?'' डॉ. बदलू बिगड़कर बोले, ''चलो एक बार प्रयत्न करता हूँ।''

डॉक्टर ने कनखजूरे की दायीं टांगों पर हाथ फेरा। वह आराम से पड़ा रहा। डॉक्टर ने कहा, ''किसी टांग में दर्द नहीं है।''

''शायद बायीं ओर की टांग में होगा।'' कनखजूरा इत्मीनान से बोला।

डॉ. बदलू को गुस्सा तो बहुत आया फिर भी बायीं ओर की टांगों को जाँच लिया। दर्द वाली टांग का शोध नहीं लगा।

डॉ. बदलू ने बाबू कम्पाउंडर से कहा, ''इसे पौने सात नम्बर की दवा दे दो।'' फिर कनखजूरे से कहा, ''रात को सोते समय ये दवा खा लेना।''

''पर डॉक्टर साहब! एक बात समझ में नहीं आ रही है। जब मुझे पता नहीं, आपको भी पता नहीं कि कौन सी टांग में दर्द है तो दवा को कैसे पता चलेगा कि किस टांग को ठीक करना है।''

डॉ. बदलू का दिमाग घूम गया। बोले, ''बस अब जाओ। कल इसी समय आना। 24 घंटे हैं तुम्हारे पास। पक्का पता करके आना कि किस टांग का इलाज करना है।''

दूसरे दिन कनखजूरा समय पर पहुँचकर टेबल पर चढ़कर बैठ गया। डॉ. बदलू के आते ही बोला,

''डॉक्टर साहब! एक बात तो पक्की हो गई।''

''कौन–सी बात?''

''यही कि दर्द दायीं ओर की टांगों में से किसी टांग में है।''

''टांग का नम्बर बताओ। देखकर दवा देता हूँ।'' डॉ. बदलू ने चैन की सांस ली।

''नम्बर तो नहीं मालूम हो सका।'' कनखजूरे ने सादगी से कहा।

डॉ. बदलू ने उसके साथ सिर खपाने के स्थान पर बाबू कम्पाउंडर को पौने आठ नम्बर की दवा देने को कह दिया।

तीसरे दिन कनखजूरा आया तो उसे देखकर डॉ. बदलू की त्योरियां चढ़ गईं। कनखजूरा भयभीत हो गया। विनीत होकर बोला, ''सच्ची डॉ. साहब, टांग में दर्द है। दर्द न हो तो प्राणी क्लीनिक में क्यों आए?''

डॉ. बदलू को उस पर दया आ गई। नर्म पड़कर बोले, ''तुम्हारी इतनी सारी टांगें हैं फिर एक टांग में दर्द होने से चलने में क्या अन्तर पड़ता होगा। मेरे विचार में तो ऐसा नहीं होना चाहिए।''

''मैंने कब कहा कि चलने में कठिनाई होती है।'' कनखजूरा आश्चर्य से बोला। ''चलने में तो एहसास ही नहीं होता कि टांग में दर्द है।''

''तो फिर मेरा दिमाग खाने क्यों आते हो, जब दर्द नहीं होता तो।''

''दर्द होता है टांग में।'' कनखजूरा सहम गया। रूक–रूककर बोला,

''जब चलता नहीं, खाली बैठा होता हूँ तब एक टांग टिस–टिस करती है।''

डॉ. बदलू ने किसी प्रकार अपने क्रोध पर नियंत्रण किया और टेबल के पास से हटकर कुर्सी पर बैठ गए। बाबू कम्पाउंडर ने कागज़ पर लेकर कनखजूरे को टेबल से उतारा और द्वार के पास रखकर दांत पीसता हुआ बोला,

''तो खाली रहते ही क्यों हो होल–सेल टांगों वाले। चलते रहा करो... और अब चलते बनो यहाँ से। ये दवा बहुत अच्छी है इससे अवश्य लाभ होगा।''

अगले दिन क्लीनिक खुलने से पहले कनखजूरा मौजूद था। बाबू ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। साफ–सफाई में लग गया। उसे पता ही नहीं चला कि वह भीतर कब पहुँच गया।

डॉ. बदलू के स्कूटर की आवाज़ आई तो बाबू कम्पाउंडर ने बढ़कर उनका बैग ले लिया और उनके साथ जांच–कक्ष की ओर बढ़ता हुआ धीरे से बोला, ''वह कलूटा कनखजूरा कब से आकर बैठा है... इस समय नजर नहीं आ रहा है। चाय–वाय पीने गया होगा...।''

डॉ. बदलू कमरे के द्वार पर ठिठककर खड़े हो गए और हाथ से संकेत किया। कनखजूरा टेबल पर बैठा हुआ था।

''डॉक्टर साहब, दवा से मुझे कुछ भी राहत नहीं मिली। टांग अब भी दर्द कर रही है, जरा भी फायदा नहीं हुआ।'' डॉक्टर बदलू को देखते ही कनखजूरा शुरू हो गया।

डॉ. बदलू ने शुष्क स्वर में कहा, ''फायदा होना चाहिए। इससे पहले मैंने जिन रोगियों को यह दवा दी उन सबको फायदा हुआ।''

''उन सबकी टांगों में दर्द था?'' कनखजूरे ने कौतूहल से पूछा।

डॉ. बदलू ने घूरकर उसे देखा और कुछ कहना ही चाहते थे कि कनखजूरे ने शीघ्रता से कहा, ''ऐसा करें डॉक्टर साहब, मेरी जितनी टांगें हैं आप उतने दिन मुझे एक–एक डोज दें। शायद किसी दिन दवा सही टांग में लग ही जाए। फीस की आप चिंता न करें।''

''डॉक्टर मैं हूँ या तुम। तुम्हारे कहने से तुम्हें दवा दूँ वह भी 266 दिन...कदापि नहीं।''

''...नहीं... तीन दिन कम कर दें। तीन दिन

दवा ले चुका हूँ ना।''

डॉ. बदलू ने सिर पकड़ लिया।

कनखजूरे के जाते ही डॉ. बदलू ने शहर फोन लगाया। अपने वरिष्ठ एवं मार्गदर्शक डॉक्टर को कनखजूरे का केस बताकर उन्हें दूसरे दिन काननवन में आमंत्रित कर लिया।

अगले दिन कनखजूरे को डॉ. बदलू ने शहर के डॉक्टर से मिलाया। उन्होंने कनखजूरे से विस्तार से सब पूछा। कनखजूरे ने घंटाभर में अपनी समस्या बताई और डॉक्टर ने दस मिनट में जांच पूरी कर ली। गम्भीर होकर कुछ सोचने लगे।

''क्या बात है डॉक्टर साहब? क्या आपको भी मेरी दर्द देने वाली टांग का पता नहीं चला?'' कनखजूरे ने पूछा।

''नहीं! टांग का पता चल गया है पर दुःख इस बात का है कि वह टांग काटकर शरीर से अलग करनी पड़ेगी।''

''क्या?'' कनखजूरे के होश उड़ गए।

''डरो नहीं। एक छोटा–सा ऑपरेशन होगा बस।'' डॉक्टर साहब ने कहा।

''ऑपरेशन।'' कनखजूरा कांपने लगा।

''मैं विवश हूँ पर तुम्हें ये भी बताना चाहता हूँ कि इस टांग में घाव हो जाने के कारण आजू–बाजू की दो टांगें भी रोगग्रस्त हो गई हैं। उन्हें भी काटकर निकालना होगा। पर देर नहीं होनी चाहिए।''

कनखजूरे ने बाबू कम्पाउंडर को आवाज़ दी, ''कम्पाउंडर साहब, मुझे नीचे उतार दीजिए।''

फिर डॉक्टर साहब से बोला, ''कल...कल पर रखिए डॉक्टर साहब। मेरे पिताजी और चाचाजी दोनों दूसरे जंगल गए हैं। कल उन्हें लेकर आता हूँ।''

कनखजूरा इतनी तेजी से क्लीनिक से निकला कि जीवन में कभी उतना तेज न चला होगा।

डॉ. बदलू ने अपने मार्गदर्शक डॉक्टर से पूछा, ''क्या वास्तव में आपने दर्द देने वाली टांग ढूंढ़ ली?''

''हरगिज़ नहीं।'' डॉक्टर साहब ने मुस्कुराकर कहा, ''पर अब कनखजूरे की टांग का दर्द सदा के लिए ठीक हो गया समझो।''

और सच्ची, उस दिन के बाद कनखजूरा क्लीनिक में कभी नहीं आया।

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

दादरा और नगरहवेली का राज्यपशु

चौसिंगा

चौसिंगा एक अत्यन्त प्राचीन वन्यप्राणी है। जीव शास्त्रियों के अनुसार चौसिंगा की शारीरिक संरचना और आकार में एक करोड़ पचास लाख वर्षों से कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। उदाहरण के लिए पहले केवल बैल और बकरे के ही सींग होते थे, गाय और बकरी के नहीं। किन्तु अब एक लम्बे समय से गाय–बैल, बकरा–बकरी, भेड़, मेढ़ा सभी के सींग निकलने लगे हैं। चौसिंगा की शारीरिक संरचना के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि यह विश्व का एकमात्र ऐसा वन्यप्राणी है, जिसके सर पर चार सींग होते हैं। इन्हीं सींगों के कारण ही इसे चौसिंगा या चार सींगों वाला गवय (एन्टीलोप) कहा जाता है।

चौसिंगा सुन्दर, छरहरे शरीर वाला एक शानदार गवय (एन्टीलोप) है। यह विश्व में केवल भारतीय उपमहाद्वीप में ही पाया जाता है। चौसिंगा हिमालय पर्वत के दक्षिणी भाग, खुले वनों एवं घास के मैदानों में बहुतायत से देखने को मिलता है। यह दक्षिण भारत के अनेक भागों में भी पाया जाता है। चौसिंगा घने जंगलों में रहना पसन्द नहीं करता। यह सांभर के समान ऊँचे–नीचे पर्वतीय क्षेत्रों, पतझड़ वाले सूखे वनों, नम स्थानों एवं घास के मैदानों में रहना अधिक पसन्द करता है। चौसिंगा उन स्थानों पर रहता है जहाँ सांभर, चीतल आदि हिरन रहते हैं। सम्भवतः यही कारण है कि इसमें हिरनों जैसी बहुत–सी आदतें विकसित हो गयी हैं। चौसिंगा को पानी से विशेष लगाव होता है। यही कारण है कि यह पानी वाले स्रोतों के निकट अपना निवास बनाता है। चौसिंगा खुले मैदान के मध्य से बहती हुई नदियों,

तालाबों या निचले चट्टानी भागों में एकत्रित होने वाले पानी के स्रोतों के निकट रहना अधिक पसन्द करता है। कभी–कभी यह गाँव में मानव बस्तियों के निकट बहने वाली नदियों के पास भी अपना निवास बनाता है। जिन क्षेत्रों में चौसिंगा पाया जाता है, वहाँ इसे बस्तियों के पास घूमते एवं खेतों के निकट चरते हुए प्रायः देखा जा सकता है।

चौसिंगा कृष्णमृग के समान बड़े झुण्डों में नहीं रहता। यह सामान्यतया अकेले या जोड़े में देखने को मिलता है।

चौसिंगा विश्व का एकमात्र ऐसा वन्यजीव है, जिसमें नर के सिर पर चार सींग होते हैं। चौसिंगा को प्रकृति ने चार सींग क्यों दिये हैं? इसका कारण जीव–वैज्ञानिक अभी तक नहीं मालूम कर सके हैं। नर चौसिंगा के सींग दूसरे गवय की तुलना में छोटे होते हैं। इसके सिर पर दो सींग अपने सामान्य स्थान पर निकलते हैं। ये सीधे, चिकने और ऊपर की ओर नुकीले होते हैं। इनकी लम्बाई 9 सेंटीमीटर से लेकर 12 सेंटीमीटर तक होती है। सामान्य सींगों के ठीक सामने आँखों के ऊपर की ओर छोटे–छोटे दो अन्य सींग होते हैं, जिनकी लम्बाई डेढ़ सेंटीमीटर से ढ़ाई सेंटीमीटर के मध्य होती है।

चौसिंगा के सामान्य स्थान पर निकलने वाले सींगों का अभी तक का कीर्तिमान 18.4 सेंटीमीटर और आँखों के ऊपर की ओर निकलने वाले सींगों का कीर्तिमान 7.6 सेंटीमीटर है। मादा चौसिंगा के सिर पर सींग नहीं होते।

चौसिंगा दुबला–पतला, इकहरे शरीर वाला गवय है। इसकी लम्बाई 90 सेंटीमीटर से 100 सेंटीमीटर तक एवं कंधों तक की ऊँचाई 60 सेंटीमीटर से लेकर 65 सेंटीमीटर के मध्य होती है। चौसिंगा का पिछला भाग अगले भाग की तुलना में अधिक ऊँचा होता है। मादा चौसिंगा नर से कुछ छोटी होती है। चौसिंगा के सिर और पीठ का भाग लाली लिये हुए हल्के भूरे रंग का होता है तथा नीचे और पेट का भाग सफेद होता है। इसके चारों पैरों के सामने की ओर गहरे रंग की एक धारी होती है। यह धारी आगे के पैरों में, पिछले पैरों की तुलना में चौड़ी होती है। इसकी आँखें दूसरे गवय की तुलना में कुछ छोटी होती हैं तथा आँखों के सामने चिंकारा और कृष्णमृग के समान काले रंग की छोटी–छोटी दो ग्रन्थियां होती हैं। मादा चौसिंगा के शरीर का रंग नर के समान होता है, किन्तु पैरों की धारियों में साधारण–सा अन्तर होता है। कृष्ण मृग के समान ही चौसिंगा के शरीर का रंग भी आयु के अनुसार बदलता रहता है। कृष्ण मृग की आयु जैसे–जैसे बढ़ती है, उसके शरीर का रंग गहरा भूरा या काला होता जाता है और वृद्धावस्था में तो चौसिंगा पूरी तरह से हल्के पीले रंग का हो जाता है।

चौसिंगा अपनी प्रजाति के अन्य गवय प्राणियों– कृष्ण मृग, चिंकारा तथा नीलगाय आदि की तरह शाकाहारी है। यह रात्रि के समय किसी वृक्ष के नीचे, झाड़ियों में अथवा ऊँची–नीची घास की ओट में या किसी सुरक्षित स्थान पर चैन से

सोता है। चौसिंगा रात्रि में सोते समय भी खरगोश के समान सदैव सतर्क रहता है और हल्की–सी आहट सुनते ही फुर्ती से अपना निवास छोड़ देता है तथा लम्बी–लम्बी घास के बीच से छलांगें भरता हुआ झाड़ियों में अदृश्य हो जाता है। यह प्रातःकाल सूर्योदय के साथ अकेले भोजन की तलाश में निकल पड़ता है। इसकी चाल बड़ी शानदार और लुभावनी होती है। चौसिंगा भी चिंकारा के समान अपने शरीर को झटके देकर चलता है। चौसिंगा का प्रमुख भोजन घास–फूस, विभिन्न प्रकार की पत्तियां, फल तथा छोटी–छोटी झाड़ियां और वनस्पतियां हैं। यह दोपहर तक चरता है और फिर धूप अधिक होने पर किसी छायादार स्थान पर विश्राम करता है। सूर्य की गर्मी कम होने पर यह पुनः चरने के लिये निकलता है और इसके बाद किसी नदी–नाले या जलस्रोत की ओर निकल जाता है। चौसिंगा के लिए पानी अत्यन्त आवश्यक है। यह नियमित रूप से प्रतिदिन पानी पीता है और पानी पर पूरी तरह निर्भर रहता है। पानी के समाप्त हो जाने पर यह अपना स्थान छोड़ देता है और किसी नये स्थान की खोज में निकल पड़ता है। कभी–कभी यह भोजन की सुविधा के लिए जंगल के छोर पर अपना निवास बनाता है और पानी पीने के लिए मानव बस्तियों के निकट या गाँव के किनारे बहने वाली नदियों तक आ जाता है।

चौसिंगा दिवाचर है। अर्थात् दिन के समय चरता है किन्तु कभी–कभी दिन में पर्याप्त भोजन न मिलने पर इसे रात में भी चरते हुए देखा गया है। चौसिंगा के समान सांभर को भी रात्रि के समय चरते हुए कई बार देखा गया है। किन्तु सांभर की तुलना में चौसिंगा कम रात्रिचर है।

चौसिंगा रात्रि में चरते समय हिंसक जीवों के प्रति अधिक सतर्क रहता है क्योंकि प्रायः अधिकांश हिंसक जीव रात्रि के समय ही शिकार की खोज में निकलते हैं और गवय तथा हिरन आदि जीवों को अपना आहार बनाते हैं।

चौसिंगा के अंधाधुंध शिकार एवं जंगलों की कटाई के कारण इसकी संख्या निरन्तर कम होती जा रही है। अब यह केवल राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों और चिड़ियाघरों में ही शेष बचा है। इसकी संख्या में होने वाली कमी को देखते हुए भारत सरकार ने इसे विलुप्त–प्रायः जीवों की सूची में सम्मिलित किया है एवं इसके शिकार पर कठोर प्रतिबंध लगा दिये हैं। किन्तु अभी तक इसके कोई उत्साहवर्धक परिणाम सामने नहीं आये हैं। चौसिंगा को बचाने के लिये विशेष प्रयासों की आवश्यकता है अन्यथा वह दिन दूर नहीं, जब विश्व का एकमात्र चार सींगों वाला प्राणी चौसिंगा भी भारतीय चीते के समान धरती से विलुप्त हो जायेगा।

प्रेरक–प्रसंग : श्यामसुन्दर गर्ग

शेर को सबक

जंगल के राजा शेर को अपनी शक्ति पर बहुत अभिमान था। वह स्वयं को अपराजेय मानता था और वह अन्य पशुओं को भी परेशान करता रहता था। शेर को कौन समझाए। सभी को अपनी जान प्यारी थी। एक दिन शेर जंगल में घूमने निकला, उसकी नजर एक बाघ पर पड़ी। वह तत्काल उसके पास गया और अपनी ताकत की शेखी बघारते हुए बोला– मेरी शक्ति का कोई भी सानी नहीं है। बताओ जंगल का राजा कौन है?

बाघ विनम्रतापूर्वक बोला– हुजूर, आप ही हैं। फिर शेर थोड़ा आगे गया तो उसे वहाँ भालू मिला। उसने भालू से भी यही सवाल पूछा– जंगल का राजा कौन है? भालू तुरन्त बोला– आप ही जंगल के राजा हैं महाराज। कुछ देर बाद शेर को हाथी नजर आया तो उसके पास जाकर वही सवाल दोहराया। हाथी को गुस्सा आ गया। उसने शेर को अपनी सूंड में लपेटकर दूर फेंक दिया। शेर लंगड़ाता हुआ हाथी के पास आकर बोला– भाई, क्षमा करना, अब कभी भी अपनी ताकत का गर्व नहीं करूंगा।

बाल कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

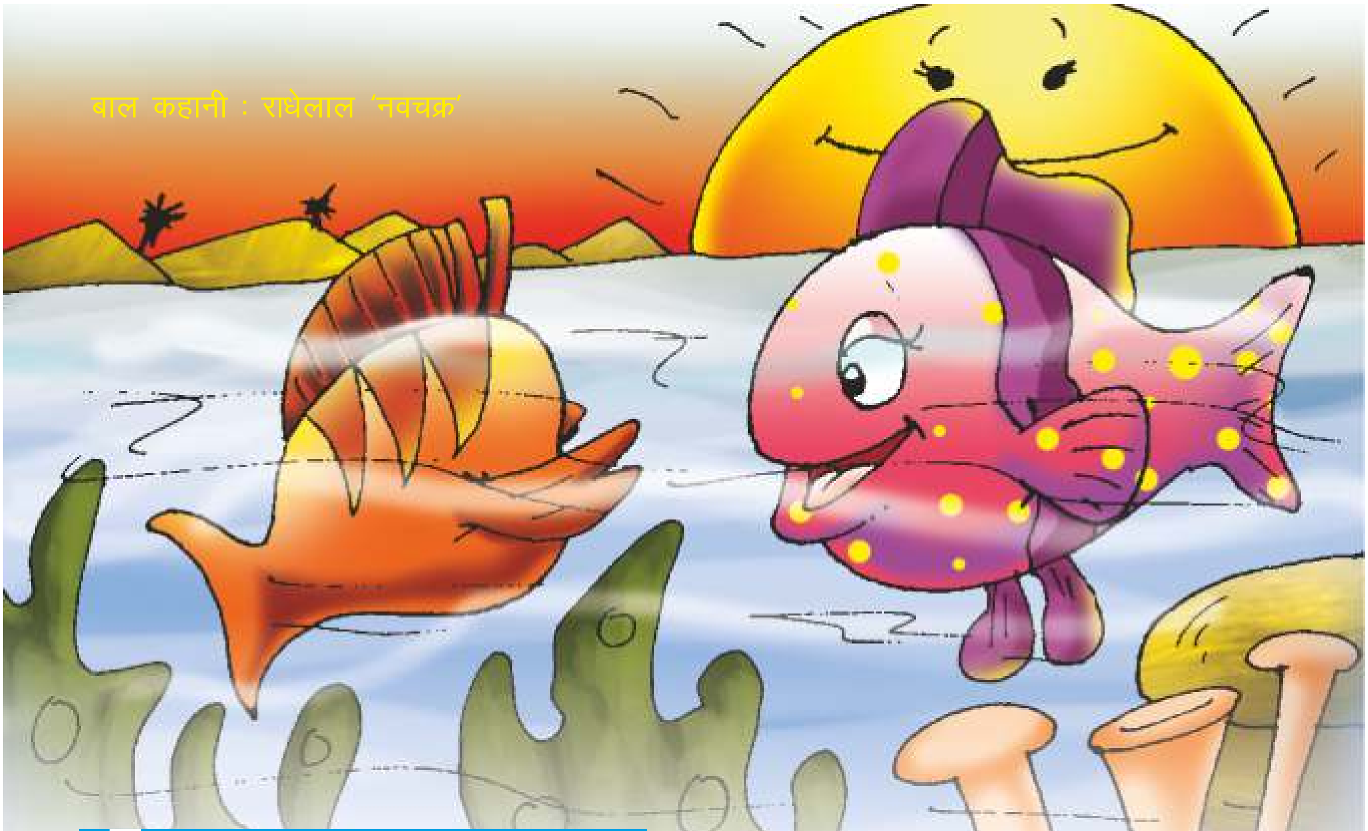

नीलू की जिद्द

उदयपुर झीलों का नगर है। वहाँ एक बड़ी–सी झील है, जिसके पश्चिमी किनारे पर मछलियां रहा करती थीं। नीलू एक नन्हीं–सी मछली थी। बहुत सुन्दर और प्यारी सी। मगर जिद्दी भी कम नहीं। जिस बात की जिद्द करती, मम्मी से उसे मनवा कर पूरी कर लेती। उसके जिद्दी स्वभाव के कारण मां परेशान रहती।

नीलू को अपनी मां की परेशानी कभी समझ में नहीं आती। इसलिए वह हमेशा लापरवाही की जिन्दगी गुजारती।

एक दिन नीलू बहुत तड़के उठी। घर से बाहर निकली। देखा, झील के पूरबी किनारे से लाल–लाल गोल सूरज धीरे–धीरे निकल रहा है। ऐसा वह पहली बार देख रही थी। यह नजारा उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह बहुत खुश हुई। दो–तीन मिनट तक वह उगते सूरज को एकटक देखती रही। फिर झट दौड़कर मम्मी के पास गयी और उसे लेकर बाहर आई। फिर बोली– देखो मम्मी, पूरब से उग रहा सूरज कितना प्यारा लग रहा है।

–हाँ, तुम्हें रोज देर से उठने की आदत है न, इसीलिए उगते सूरज को तुम कभी देख नहीं पाती। आज तड़के उठी हो तो देख पा रही हो।

–मम्मी मैं झील के पूरबी किनारे जाना चाहती हूँ जहाँ से सूरज निकल रहा है।– नीलू मासूमियत से बोली।

–नहीं, बेटी! मम्मी ने चेतावनी दी– वह किनारा यहाँ से बहुत दूर है। तुम वहाँ जाने की कभी मत सोचना।

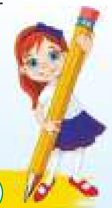

–क्यों?
–राह भटक कर खो जाओगी।
– तुम्हारे साथ चलूंगी।– नीलू ने जिद्द पकड़ी।
–नहीं मुझे घर में ढेर सारा काम है और फिर उतनी दूर जाना हम लोगों के वश की बात नहीं है। तुम यह जिद्द छोड़ दो।– मम्मी ने नीलू को समझाने की कोशिश की।
नीलू चुप रही। उसने सोचा– शायद मम्मी उसकी यह जिद्द पूरी नहीं करेगी। अतएव अकेले ही मुझे झील के पूरबी किनारे पर जाना होगा।– अपने मन की बात नीलू ने किसी को नहीं बताई।
–ठीक है।– कहकर नीलू ने मम्मी को चकमा दिया।
निश्चिन्त हो मम्मी घर के कामों में उलझ गई। करीब तीन घंटे बाद मम्मी ने नीलू को खाने के लिए पुकारा। लेकिन कहीं से नीलू की आवाज नहीं आई। मम्मी परेशान हो उठी। उसने आसपास सभी जगह नीलू को ढूंढा। मगर वह कहीं भी दिखाई नहीं दी। उसकी सहेलियों से भी नीलू की मम्मी ने पूछताछ की। किसी ने भी उसके बारे में नहीं बताया।
अब मम्मी का दिमाग ठनका। वह सोचने लगी, 'हो न हो ऐसा लगता है, नीलू अकेली झील के पूरबी किनारे चली गई हो। सुबह जाने की जिद्द कर रही थी।' फिर क्या था, मम्मी झट उसकी खोज में निकल पड़ी।
पूरबी किनारे पर वह कहीं नहीं मिली। मम्मी उत्तरी किनारे की ओर बढ़ी। वहाँ भी कहीं नजर नहीं आई। हारकर मम्मी वापस पश्चिमी किनारे अपने घर आ गई। एक पड़ोसी मछली ने उसे परेशान देखकर पूछा तो उसने उसे नीलू के गायब होने और खो जाने की बात बता दी। दक्षिणी किनारा ढूंढना बाकी रह गया है, यह भी जानकारी उसने पड़ोसी मछली को दी।

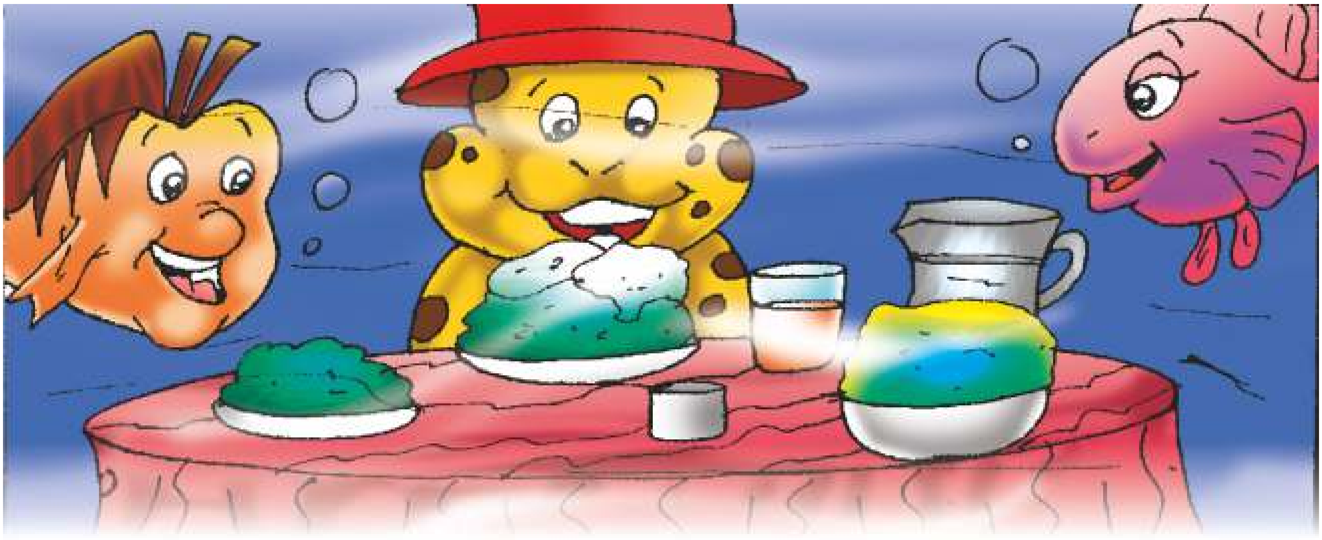

तभी टेलीफोन की घंटी बज उठी। नीलू की मम्मी ने टेलीफोन कान से लगाकर कहा– हैलो!

दूसरी ओर से आवाज आई– क्या आप नीलू की मम्मी हैं?

–हाँ, नीलू कहाँ है?

–वह अभी डरी–सहमी है। खूब घबराई हुई है। रो रही है।

–आप कौन हैं?

–मैं कालू मेंढक हूँ। मेढ़कों की बस्ती से बोल रहा हूँ।– कालू ने आगे कहा– नीलू बोल रही थी, वह झील के पूरबी किनारा सूरज का घर देखने के लिए चुपचाप अपने घर से अकेली निकल पड़ी थी। मगर राह भटक कर वह हमारी बस्ती में आ पहुँची है। हमने उसे बहुत ढांढ़स दिया और भरोसा दिलाया कि उसे उसके घर पहुँचा देंगे तो वह कुछ आश्वस्त हुई। बहुत कठिनाई से उसने हमें अपना नाम बताया और कई बार पूछने पर घर का टेलीफोन नम्बर।

–क्या आप मेरी नीलू से बात करा सकते हैं?

–क्यों नहीं।

दोनों मां–बेटी थोड़ी देर तक टेलीफोन पर एक–दूसरे से बातें कर जब चिन्ता रहित हुई तो मम्मी ने नीलू से कहा– अब तुम टेलीफोन अपने कालू चाचा को दो।

कालू मेंढक ने टेलीफोन पर नीलू की मम्मी से कहा– आप घबराएं नहीं। मैं नीलू को लेकर आपके घर पहुँच रहा हूँ।

–बहुत खूब कालू भाई। मैं आप दोनों के आने का इन्तजार कर रही हूँ।

करीब दो घंटे के बाद कालू मेंढक नीलू मछली को लेकर उसके घर आ पहुँचा तो नीलू मम्मी से चिपक कर फूट–फूट कर रोने लगी। फिर चुप हो बोली– अब मैं कभी भी किसी बात के लिए जिद्द नहीं करूंगी और तुम्हारी हर बात मानूंगी।

मम्मी ने प्यार से नीलू को समझाया– मेरी अच्छी बेटी, मेरी बात नहीं मानने और अपनी जिद्द पूरी करने का नतीजा तो आज तुमने देख ही लिया न! यह तो तुम्हारे कालू चाचा अच्छे हैं जो तुम्हें घर तक ले आए वरना आजकल बुरे लोगों की कहीं कोई कमी नहीं है। तुम्हारी जान को भी खतरा था।

–हाँ, मम्मी!– नीलू ने स्वीकारा और फिर जिद्द न करने की कसम खाई। ★

वैज्ञानिक जानकारी : घमण्डीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

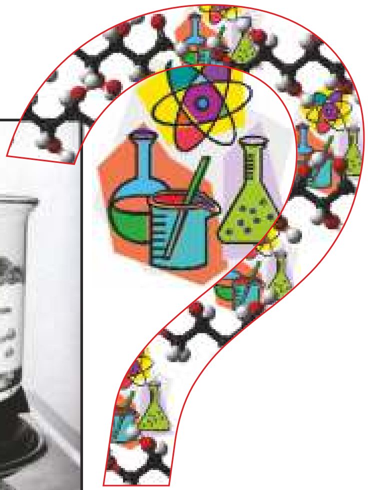

प्रश्न : दूध में उफान क्यों आता है?

उत्तर : तुमने अक्सर देखा होगा कि दूध को एक सीमा से अधिक गर्म करने पर वह उफनकर बर्तन से बाहर आने लगता है। जानते हो, ऐसा क्यों होता है? दरअसल, दूध को जब गर्म किया जाता है तो उस पर झाग की एक परत बन जाती है। साथ ही गर्म होने से दूध में पानी की भाप भी बनती है जिसके कारण दूध ऊपर की ओर उठता है। यह भाप जब दूध के ऊपर की परत से टकराती है तो दूध उफनने लगता है। इसे दूध में 'उफान' आना भी कहा जाता है। पानी के छींटे मारने से दूध का उफान शांत हो जाता है क्योंकि ठंडे पानी का पानी की भाप का सम्पर्क में आने पर उफान को प्रभावित कर देती है।

प्रश्न : पानी में उफान क्यों नहीं आता है?

उत्तर : दूध और चाय को अधिक गर्म करने पर उनमें उफान आता है लेकिन पानी को कितना भी गर्म किया जाए, वह कदापि नहीं उफनता है। ऐसा क्यों होता है? इसका कारण यह है कि दूध को गर्म करने से उस पर झाग की एक परत बन जाती है जिससे वाष्प (Vapours) बाहर नहीं निकल पाती है और दूध में उफान आने से वह उफन कर बाहर निकलने लगता है। लेकिन पानी को गर्म करने पर वह वाष्प बनकर तुरन्त उड़ जाता है। बस, इसी कारण से पानी में कोई उफान नहीं आता है।

प्रश्न : रोमांच या भय से तुम्हारे बाल क्यों खड़े हो जाते हैं?

उत्तर : सामान्यतौर पर तुम्हारे बाल 39^0 से 59^0 के कोण पर झुके रहते हैं। किन्तु रोमांच अथवा भय की स्थिति में ये खड़े हो जाते हैं। तुम्हारे बालों का ऐसे खड़े होना विशेष मांसपेशियों के कारण होता है जिन्हें 'इरेक्टर' कहते हैं। इसके अतिरिक्त बालों से जुड़ी सिवेशियम नामक ग्रंथियों (Glands) में सीबम (एक प्रकार का तैलीय पदार्थ) बनता है जो बाहर नहीं निकलता। सीबम बालों को चिकना एवं जलरोधी बनाता है।

तीन बाल कविताएं : अंकुश्री

शीशम

मजबूत होती इसकी लकड़ी,
इसकी खाती पत्तियां बकरी।

मजबूत काठ इससे मिलता,
तरह–तरह का रूप निकलता।

ऊँचा–ऊँचा होता है यह,
जलावन अच्छा देता है यह।

जो करता है इसकी खेती,
धरती माता धन है देती।

बेल

इसका होता बहुत बड़ा फल,
पकने पर हो जाता निरबल।

मीठा फल से रहे तन ठीक,
सुगंध इसकी नहीं हो फीक।

कांटा इसका बड़ा बड़ा है,
बेलपत्तर भी शिव को प्रिय है।

पेड़ बड़ा है यह गुणकारी,
इसीलिये है यह सुखकारी।

गम्हार

हलकी लकड़ी बड़े काम की,
गाँव–खेत में बड़े नाम की।

है उपयोगी खेत–खलिहान,
किसान का भी यही अभियान।

कभी दवा में आये यह काम,
चिड़िया बैठे सुबह ओ' शाम।

सूखी लकड़ी बने जलावन,
हरियाली से भला लगे वन।

जानकारी : दिनेश दर्पण

बिल्लियां, कुछ अनूठी

घरेलू बिल्लियां तो हम सबने देखी हैं पर बिल्लियों की बहुत–सी प्रजातियां होती हैं जो देश–विदेश में पाई जाती हैं। घरेलू बिल्लियों की संख्या देश में करोड़ों में है। गुच्छेदार बालों वाली साइबेरियाई बिल्लियां, रोंएदार फारसी बिल्लियां, नीली आँखों वाली थाईलैंड की बिल्लियां चिकनी त्वचा वाली और रोंए वाली होती हैं। बिना पूंछ वाली मैंक्स बिल्लियां। यह बिलकुल अलग किस्म की होती हैं। इनके पूर्वज अफ्रीका में रहते थे। मिस्र में बिल्लियों को पवित्र मानकर उनकी याद में मंदिर बनाये जाते थे। यहाँ तक कि पूरे राष्ट्र–सम्मान से उन्हें दफनाया भी जाता था। यदि कोई बिल्ली घर में रहती थी तो लोगों का ऐसा विश्वास था कि उस घर के मालिक की आत्मा उस बिल्ली में है। यदि कहीं घर में आग लग जाती थी तो पहले बिल्ली को बचाया जाता था और फिर बाद में किसी अन्य को। यदि किसी ने गलती से बिल्ली को मार दिया तो भी उसे भी मौत की सजा हो सकती थी। वास्तव में मिस्रवासी बड़े आदर व मित्र भाव से बिल्लियां पालते थे।

आज तक भी बहुत से लोग यह विश्वास करते हैं कि अगर बिल्ली रास्ता काट जाए तो समझना चाहिए कि बुरा वक्त आने वाला है। संयोगवश अंग्रेज किसी बिल्ली को देखकर अच्छी किस्मत मानते हैं। नाविक तो यह कहते हैं कि जिस जहाज पर बिल्ली बैठी हो उसे खराब मौसम से नहीं डरना चाहिए।

बिल्ली बहुत कुछ कर सकती है। यह हमेशा अपने पंजों पर उतरती है, चाहे वह कैसे

भी गिरे। हवा के बीच झोंके में मुड़ना कोई आसान काम नहीं है जबकि कुछ पकड़ने का कुछ सहारा भी नहीं होता। यह अंधेरे में देख सकती है। बिल्ली की आँखों में विशेष तत्वों वाली एक पतली–सी झिल्ली होती है जो रोशनी देती है। कभी–कभी तो अस्सी मीटर दूर से भी अंधेरे में बिल्ली की आँखें देखी जा सकती है। बिल्ली को अंधेरे में देखने के लिए आम आदमी से छः गुना कम रोशनी चाहिए। बिल्लियों के हल्के–हल्के तेजी से चलने वाले पंजे अंधेरे में रास्ता दिखाने के लिए सहायक होते हैं।

बिल्लियों की सुनने की शक्ति भी बड़ी तेज होती है। उनके कान के सिरे का मोड़ (बनावट) बारीक से बारीक आवाज को पकड़ने में काम आता है। बिल्लियों की रीढ़ की हड्डी मजबूत व लचकदार होती है। पिछले भाग की शक्तिशाली टांगें और राडार की तरह घुमावदार पूंछ ही शिकार पर झपटने में सहायता करती है। किसी बिल्ली को यदि अंधेरे में सहलाया जाए तो उसके फरों से चमक निकलती नजर आती है। बिल्लियां अपने घर का रास्ता ढूंढने में भी कुशल होती हैं। अगर बिल्ली को 1000 कि.मी. दूर भी छोड़ दिया जाए तो भी वह अच्छी तरह से वापस घर आ जाती है। बिल्ली के नाखून कुछ ऐसे होते हैं कि उन्हें वह पंजों में दबा सकती है। बिल्ली के चरित्र की एक खास बात यह है कि दूसरे जानवरों जैसे छोटे पिल्लों, चूजों, चूहे के बच्चों आदि को अपने बच्चों की तरह ही पालती है।

चूहों के फरों के ऊपर गंधक की अधिकता के कारण ही बिल्ली चूहों को पूरा चबा डालती है। बिल्लियां पानी से डरने पर भी मछली के पीछे पानी में गोता लगा सकती है। मिरॉन कही जाने वाली बिल्ली ने कजाखिस्तान के पठार में भूविज्ञानियों के समूह के साथ सफर करने में ख्याति प्राप्त की। वह उनके शिविरों में सांप को पूंछ से पकड़कर ऐसा झटका मारती थी कि वह मर ही जाता था। वह अपनी तसल्ली के लिए सांप के सिर को काटकर अलग कर देती थी।

बिल्ली आजाद स्वभाव की जानवर है। वे लोगों के साथ सहायक बनकर रहती है। पर कभी भी कोई यकीनन यह नहीं कह सकता कि वह बिल्ली का दोस्त है या मालिक। बिल्लियों की एक नई जाति है जिसे फराओ कहा जाता है यह बिलकुल कुत्ते जैसा व्यवहार करती है और इसमें अक्खड़पन भी कम होता है।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

वाओ! कितनी प्यारी जगह है, और यहाँ कितनी सारी बर्फ भी पड़ी है।
हाँ बेटा। शिमला में इसी तरह बर्फ पड़ती है।
क्यों ना हम बड़ा सा snowman बनाएं?
नहीं, नहीं हम बर्फ का घर बनाएंगे जिसमें हम सब बैठकर बर्गर, पिज़्ज़ा कोल्ड-ड्रिंक आदि खा पी सकें।
अब हम सब मिलकर बर्फ इकट्ठी करते हैं
आओ किट्टी हम सब मिलकर बर्फ का घर बनाएं।
मैं तो Snowman ही बनाऊँगी।

अरे! किट्टी तुम यहाँ बैठकर क्या कर रही हो? जाओ अपना snowman बनाओ।
देखों! मेरा छोटा-सा snowman कितना अच्छा बना है।
किट्टी अब बर्फ का घर बनाने में हमारी मदद करो।

चलो अब मैं भी तुम्हारी मदद करती हूँ।
अरे वाह! तुम्हारा घर तो बहुत ही अच्छा बना है।
आओ, हम सब मिलकर अपने नये घर के साथ फोटो खीचते हैं।
cheeze......

रोमांचक कथा : डॉ. जमनालाल बायती

फकीर की निर्लिप्तता

नादिरशाह अपने अत्याचारों के लिए जन–साधारण में कुख्यात था। वह अपनी प्रजा को कई प्रकार से प्रताड़ित कर सताया करता था। एक बार उसने दूत भेजकर एक फकीर को बुलाया। दूत फकीर के पास जाकर बोला– बादशाह ने आपको बुलाया है, चलिये।

फकीर ने पूछा– क्यों बुलाया है?

दूत ने कहा– बादशाह कुछ जानना चाहते हैं, उन्हें कुछ पूछना है।

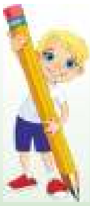

फकीर बोला– बादशाह को कुछ पूछना है या वे कुछ जानना चाहते हैं तो उन्हें मेरे पास आना चाहिये। मुझे कुछ आवश्यकता होगी या मुझे कुछ लेना होगा तो मैं बादशाह के पास जाऊंगा। अभी तो मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे किसी वस्तु की जरूरत भी नहीं है। जाओ, अपने बादशाह को कह देना कि फकीर ने आने से मना कर दिया है। उन्हें यदि कुछ चाहिए या कुछ पूछना हो तो वे स्वयं आयें।

सन्त का उत्तर सुनकर नादिरशाह आगबबूला हो गया। अपनी बेइज्जती जानकर क्रोध से लाल हो गया। यह पहला फकीर है जिसने मेरी आज्ञा नहीं मानी और कहलवाया है कि कुछ चाहिए या कुछ पूछना है तो मेरे पास आएं।

दो चार दिन बीत गए। नादिरशाह का क्रोध शान्त हुआ और एक दिन फकीर की कुटिया पर पहुँच गए। बोले– मैंने तुमको बुलाया था, सन्तरी को भेजा था।

फकीर ने कहा– हाँ, एक आदमी आपका सन्देश लाया था। उसके साथ मैंने उत्तर भी भिजवा दिया था।

नादिरशाह बोला– तो तुम बादशाह की अवहेलना कर रहे हो, सोच लो।

–मुझे बादशाह से कुछ नहीं कहना है।– फकीर ने कहा।

बादशाह और फकीर दोनों, दस–पन्द्रह मिनट तक शांत रहे एवं एक दूसरे को देखते रहे। बादशाह ने ही मौन तोड़ा।

–मुझे जानकारी मिली है कि तुमने नींद पर विजय पा ली है। वह विधि व उपाय मैं जानना चाहता हूँ।– नादिरशाह ने कहा।

–उस विधि को जानकर आप क्या करेंगे?

–मैं दिन–रात लगातार जागता रहकर, अपनी सेना की सहायता से विश्व का प्रत्येक देश जीतना चाहता हूँ।

फकीर ने लम्बी सांस ली। फिर विश्वास और साहस के साथ बोला– वह उपाय आपको नहीं बताया जा सकता। इसके विपरीत मैं चाहता हूँ कि आप रात में ही नहीं, दिन में भी सोते रहें जिससे आप जनता पर अत्याचार कम कर सकें तथा

जनता सुख–चैन से जी सके। उसी में आपका व जनता का भला है।

नादिरशाह के हाथों के तोते उड़ गये। क्रोध उसके चेहरे पर स्पष्ट झलक रहा था। उसने म्यान से अपनी तलवार निकाली और फकीर की ओर देखते हुए गरजकर बोला– फकीर! बहुत हो गया, सम्भल जा। अब तो तेरी मृत्यु निकट है, अब तो तुझे मृत्युदंड दिया जाना ही सही है।

फकीर ने निर्भीक होकर हँसते हुए कहा– मुझे पता है कि आप कुछ देने थोड़े ही आओगे। यह देह आज नहीं तो कल मिट्टी में मिलने वाली है। इसे यदि आप आज ही खत्म कर देते हैं तो क्या फर्क पड़ने वाला है– एक फकीर धरती पर रहे या न रहे इससे क्या फर्क पड़ने वाला है। अरे निर्दयी कंगाल! यह शरीर आज ही, अभी ही ले लो, अपनी भूख व तृष्णा शान्त कर लो।

नादिरशाह पाषाण के समान खड़ा रहा, मानो काटो तो खून नहीं। सहम गया वह। फकीर की निर्भीकता के आगे उसकी जुबान से एक शब्द नहीं निकला। उसने अपनी तलवार म्यान में डाल ली और उल्टे पैर लौट चला।

• • •

असभ्यता का द्योतक

अमेरिका के राष्ट्रपति 'जॉर्ज वाशिंगटन' घोड़े पर बैठकर कहीं जा रहे थे।

रास्ते में एक नीग्रो व्यक्ति ने टोपी उतारकर उनका अभिवादन किया।

प्रत्युत्तर में राष्ट्रपति ने भी टोपी उतारी और उसी तरह अभिवादन का उत्तर दिया।

उनका एक सहयोगी जो उनके साथ था उसने टोका– ''बड़प्पन की दृष्टि से आपको ऐसा नहीं करना चाहिये था।''

यह सुनकर वाशिंगटन ने उत्तर दिया– 'एक अशिक्षित और साधारण व्यक्ति ने विनम्र अभिवादन करके अपनी सभ्यता का परिचय दिया। मैं शिक्षित होते हुए भी ऐसा नहीं करता तो यह मेरी असभ्यता का द्योतक होता।'

प्रस्तुति : मदन देवडा

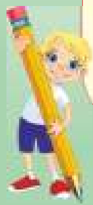

कविता : गफूर 'स्नेही'

राष्ट्रीय पक्षी

बड़ी शान से चलता है,
तन है सुनहरा उसका।
कलगी माथे पर सोहे,
पूंछ शानदार है ठुमका।

मोर कहते हैं उसको,
राष्ट्रीय पक्षी कहलाता।
उसके आगे विषधर भी,
डर अपनी दुम दबाता।

पूरा तन सुन्दर उसका,
शानदार है उसकी दुम।
नाचता है मजे से वह,
होश उसके होते गुम।

उसे कहते हैं राजा पक्षी,
वह बागों में रहता है।
बड़ी शान से रहता है।
मोर राजा कहाता है।

बाल कविता : राधेलाल 'नवचक्र'

गरुड़

गरुड़ नहीं देखा है जिसने,
सुनो, वह जलपक्षी है।
बड़ा आकार श्वेत रंग का,
होता सर्प भक्षी है।।

भगवान विष्णु का वाहन है,
माना ऐसा जाता।
इसकी महिमा में लिखा गया,
गरुड़ पुराण नहीं पता।।

लेख : जयेन्द्र

बातें समन्दर की रानी की

जल की रानी यानी मछलियों का संसार भी बड़ा विचित्र है। संसार में भिन्न–भिन्न तरह की मछलियां पाई जाती हैं। जैसे– समुद्री 'व्हेल शार्क' दुनिया की सबसे बड़ी मछली है। इसकी औसत लम्बाई 185 मीटर तथा भार 42 टन होता है। यह अटलांटिक प्रशांत और हिन्द महासागर में पायी जाती है।

संसार की सर्वाधिक जहरीली मछली इंडो पेसिफिक के उष्णकटिबंधीय जल में पायी जाने वाली 'स्टोनफिश' है। इन मछलियों के कांटों को छू लेने से भी मृत्यु हो जाती है।

विश्व में समुद्र की सबसे छोटी मछली 'ड्वार्फ गोबी' है। यह हिन्द महासागर के चागोस द्वीप समूह के आसपास पायी जाती है। इसकी औसत लम्बाई 8.9 मिमी. है।

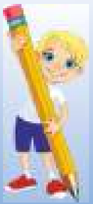

दक्षिण अमेरिका के समुद्र में काला रंग छोड़ने वाली मछलियों की दस भुजाएं होती हैं, जिनमें से दो काफी लम्बी होती है। उन दो भुजाओं से वह हाथों का काम लेती है। ये भुजाएं काफी तेजी से अपने आहार का शिकार करती हैं। ये मछलियां अपने शरीर से काली स्याही के समान 'सेपिया' नाम का काला पदार्थ छोड़कर अपने आसपास के पानी को रंग देती हैं और अपने को उसमें छिपाकर शत्रुओं को धोखे में डाल देती हैं।

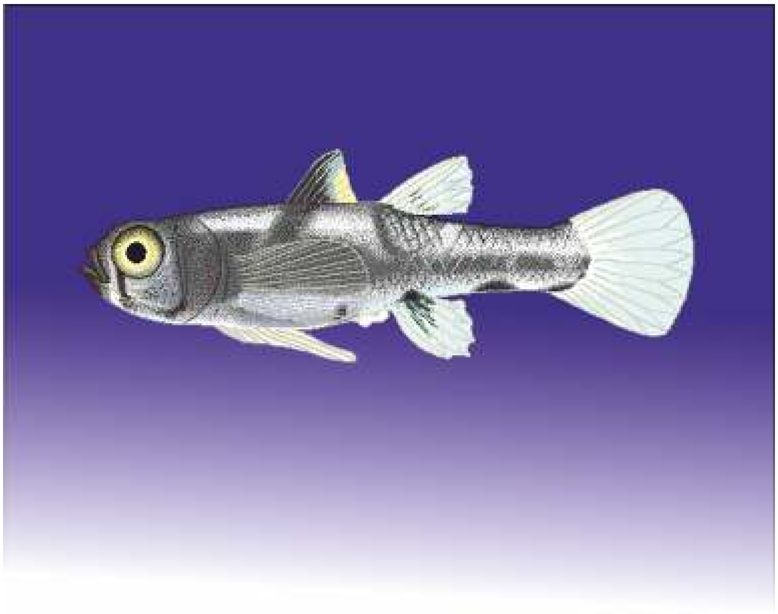

अरब सागर में 'निप्राइओ' नामक नीले वर्ण की मछली पाई जाती है। इसकी औसतन लम्बाई एक से दो फुट तक होती है। यह अपना शिकार ढूंढने के लिए पानी में नीली रोशनी करती है। इस रोशनी से आकर्षित होकर छोटे–मोटे कीड़े इसके मुख की तरफ चले आते हैं और ये आराम से उन्हें खाती रहती है।

इसी तरह आस्ट्रेलिया के समुद्र में 'टिरयू' नामक मछली जिसकी लम्बाई आधे फुट से डेढ़ फुट तक होती है, कभी–कभी दिखाई देती है। यह पानी से तीन–चार फुट तक उड़ान भरकर फिर से पानी में गोता लगा लेती है। यहाँ के निवासी इसे 'चिड़िया मछली' भी कहते हैं।

'ब्रिटर्लस्टार' मछली गर्म समुद्रों में पाई जाती है। इसकी आकृति मकड़ी की तरह होती है। जब यह सुस्त पड़ी रहती है तो इसके गोल शरीर के चारों ओर इसकी पतली–पतली चार टांगें दिखाई देती है। इसके वर्ण मूंगिया, भूरे व केसरिया होते हैं।

तारक मछली के शरीर के चारों ओर एक खोल सा गढ़ा होता है। शरीर के अन्दर हड्डियों का ढांचा नहीं होता।

दक्षिण अफ्रीका के समुद्र में डिरबाई प्रजाति की मछली अपने शरीर से एक तरह की खुशबू भी निकालती है। इसे 'फूल मछली' भी कहा जाता है।

पढ़ो और हँसो

मरीज : डॉक्टर साहब! मेरा सरदर्द करता है।
डॉक्टर : यह तो कमजोरी के लक्षण हैं। आप छिलके सहित फल खाया करो।
(थोड़ी देर बाद)
मरीज : डॉक्टर साहब! पेट में दर्द हो रहा है।
डॉक्टर : क्या खाया?
मरीज : छिलके सहित नारियल।

बच्चा : (पापा से) पापा–पापा, कृष्ण भगवान किस रंग के थे?
पापा : सांवले।
बच्चा : तो फिर दादा जी हरे कृष्ण, हरे कृष्ण क्यों कहते हैं।

राहुल : यार! आज तक इसका पता क्यों नही चल पाया है कि अक्ल बड़ी या भैंस?
रोहित : दोनों की जन्मतिथि मालूम नहीं है ना इसीलिए।

– सौरभ कुमार (हरदोई)

सोनू : आज मैंने एक जान बचाई।
मोनू : वो कैसे?
सोनू : मैंने एक भिखारी से पूछा– मैं तुम्हें दो हजार का नोट दूँ तो तुम क्या करोगे?
उसने कहा– मैं खुशी से मर जाऊँगा। इसलिए मैंने वह नोट उसे नहीं दिया और उसकी जान बच गई।

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

शिक्षक : बताओ सोनू सप्ताह में कितने दिन होते हैं?
सोनू : जी सर, सात।
शिक्षक : बोलकर बताओ।
सोनू : एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात।

माँ : (बेटे से) बेटा, कल तुम्हारा पेपर है, तुमने पूरी तैयारी कर ली है न?
बेटा : हाँ मम्मी, मैंने नये पैन ले लिये हैं, पेंट–कमीज भी प्रेस कर ली है और जूता भी पॉलिश कर लिये हैं।

– श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

गप्पू और पप्पू आपस में अपनी–अपनी समस्याओं पर चर्चा कर रहे थे।

गप्पू : यदि मैं कॉफी पीता हूँ तो मैं सो नहीं सकता।

पप्पू : मेरे साथ तो इसका ठीक उल्टा होता है। यदि मैं सो जाता हूँ तो कॉफी नहीं पी सकता।

शिक्षक : (किसान से) आपका बेटा क्लास में सबसे कमजोर है।

किसान : भगवान की दया से घर में दो–दो भैंस हैं। दूध–घी की कमी नहीं है, फिर भी पता नहीं ये इतना कमजोर क्यों है।

दीपक रात को बार–बार रसोई में जाता और चीनी का डिब्बा खोलकर देखता, फिर बंद करके रख देता। बार–बार की इस खटर–पटर से पत्नी परेशान हो गई। आखिर उसने पूछ ही लिया।

दीपक बोला– कल मैं डॉक्टर के पास गया था न, उसने कहा कि हर घंटे शुगर चेक करना और कम या ज्यादा होने पर मुझसे सम्पर्क करना।

– रवित वधवा (श्रीगंगानगर)

पुत्र : (पिता से) पिताजी, मुझे ढोल खरीद दीजिए न।

पिता : नहीं बेटे, तू ढोल बजाकर मुझे तंग किया करेगा।

पुत्र : नहीं पिताजी, मैं तो तब बजाऊँगा जब आप सो जाया करेंगे।

– दीपक पवार (भिलाई)

वर्ग पहेली के उत्तर

■	■	1 इ	च्छा	■	2 रे	■
3 शि	क्ष	क	■	4 रा	व	ण
का	■	5 बा	स	म	ती	■
6 गो	7 कु	ल	■	बो	■	8 ना
■	रु	■	9 का	ला	10 पा	नी
11 उ	प	12 का	र	■	ऊं	■
र्जि	■	बु	■	13 पां	ड	14 व
15 त	मि	ल	ना	डु	■	धू

पुष्प प्रश्नावली

प्रस्तुति : सीताराम गुप्ता

प्रश्न 1: सूर्य की दिशा में घूमने वाले फूल का क्या नाम है?

प्रश्न 2 : किस फूल के नाम में सोने के सिक्के का समानार्थी शब्द है?

प्रश्न 3 : हमारे यहाँ किस फूल से सौन्दर्य और पवित्रता की उपमा दी जाती है?

प्रश्न 4 : उस पेड़ का क्या नाम है जिसके फूल पीले रंग के गुच्छों में आते हैं और पूरे पेड़ को ढ़क लेते हैं? इसके फल बाँसुरी के आकार के होते हैं।

प्रश्न 5 : इनमें से कौन–सा शब्द फूल का पर्यायवाची नहीं है :

(1) कुसुम (2) प्रसून (3) पंकज (4) सुमन

प्रश्न 6 : निराला ने किस फूल को शोषण और पूँजीवाद का प्रतीक माना है?

प्रश्न 7 : महाशिवरात्रि पर शिव की पूजा किन फूलों से की जाती है?

प्रश्न 8 : कविता 'पुष्प की अभिलाषा' किस कवि की रचना है?

प्रश्न 9 : ट्यूलिप नामक फूल मूल रूप से किस देश का है?

प्रश्न 10 : दिल्ली स्थित बहाई मंदिर किस फूल के आकार का बना है?

प्रश्न 11 : फूलों का वह कौन–सा वृक्ष है जो समुद्र मंथन के समय निकला था?

प्रश्न 12 : हमारे देश में फूलों की घाटी किस राज्य में स्थित है?

(उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

अपना सामान्य ज्ञान बढ़ाओ

प्रस्तुति : विभा वर्मा

स्थापत्य कला किसे कहते हैं?

इमारतों के निर्माण की विधि को स्थापत्य कला कहते हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि सभी की अपनी–अपनी स्थापत्य शैली रही है। स्थापत्य शैली स्थानीय प्राकृतिक परिस्थितियों, उपलब्ध सामग्री और आवश्यकता पर निर्भर करती है। हड़प्पा सभ्यता में इमारतें ईंटों से निर्मित थीं। जबकि बाद में मंदिरों एवं मजिस्दों में मुख्यत: पत्थरों का ही प्रयोग हुआ था। भारतीय मंदिरों में स्थापत्य शैली मुख्यत: दो शैलियों में बंटी हुई है। द्रविड़ शैली और नागर शैली।

इन्द्रधनुषी क्रांति क्या है?

नई राष्ट्रीय कृषि नीति में दुग्ध (श्वेत क्रांति) मत्स्य उत्पादन (नीली क्रांति) तिलहन उत्पादन (पीली क्रांति) और खाद्यान्न उत्पादन (हरित क्रांति) सभी को समग्र रूप में विकसित करने की रणनीति अपनाई गई है। जिसे इन्द्रधुनषी क्रांति कहते हैं।

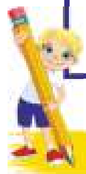

कविता : कमलसिंह चौहान

माता-पिता की सेवा

खिलते जाओ फूलों जैसे,
बहते जाओ नदियों जैसे।
राम कृष्ण गौतम की धरती,
मिलते जाओ पानी जैसे।।

माता–पिता की कर लो सेवा,
गुरु भक्ति से पा लो मेवा।
युगपुरुषों सा त्याग करो तुम,
प्रताप शिवा का कर्म हो जैसे।।

पौधों सा तुम बढ़ना सीखो,
कठिन डगर पर चलना सीखो।
घबराओ मत तुम कांटो से,
शूलों के संग फूल हो जैसे।।

मधुमक्खी सा मिलना सीखो,
शेर चाल की चलना सीखो।
कोयल की प्यारी बोली बोलो,
सदा भारत मां की जय बोलो।।

दिसम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **केसर प्रेम उत्तमचन्दानी** 11 वर्ष
रूम नं. 1, ब्लॉक नं. क्यू–1,
कुमार नगर, धुले (महाराष्ट्र)

2 **यसमीन** 9 वर्ष
जी–23, सिविल लाइन,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

3 **लवलीन आहूजा** 13 वर्ष
म.नं. 1409/3, फेस–11,
मोहाली (पंजाब)

4 **सेफाली गौतम** 13 वर्ष
ग्राम : सुरैला,
जिला : बस्ती (उ.प्र.)

5 **शगुनप्रीत कौर** 8 वर्ष
गाँव : दफरपुर, पोस्ट : मुबारिकपुर,
जिला : मोहाली (पंजाब)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

आन्या (पीतमपुरा, दिल्ली),
अद्वितीय, समीक्षा (अजमेर),
सिमरन (आदर्श नगर, फगवाड़ा),
संध्या (जेकब सर्कल, मुंबई),
वैष्णवी (अकबरपुर, अम्बेडकर नगर),
अमनप्रीत (झाकड़ी, शिमला),
साबिर कुमार (पंजाला),
यशप्रीत (से. 40–डी, चंडीगढ़),
अंजू (सोनीपत),
प्रवान (से. 40–ए, चंडीगढ़),
महक (इंदिरा कालोनी, बिलासपुर),
आरती (ट्रस्ट लेन, भटिंडा),
जगदीप सिंह (राणा प्रताप बाग, दिल्ली),
काव्या (तपा मंडी),
भव्या, वान्या (किंग्जवे कैम्प, दिल्ली),
खुशी (अशोक विहार, नकोदर),
यश (मनीमाजरा),
तमन्ना (कुंदन नगर, फिरोजपुर),
मुक्ति सोनी (महोबा),
निहारिका (मोहाली)।

फरवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 फरवरी तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अप्रैल अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

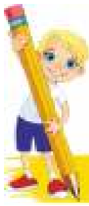

रंग भरो

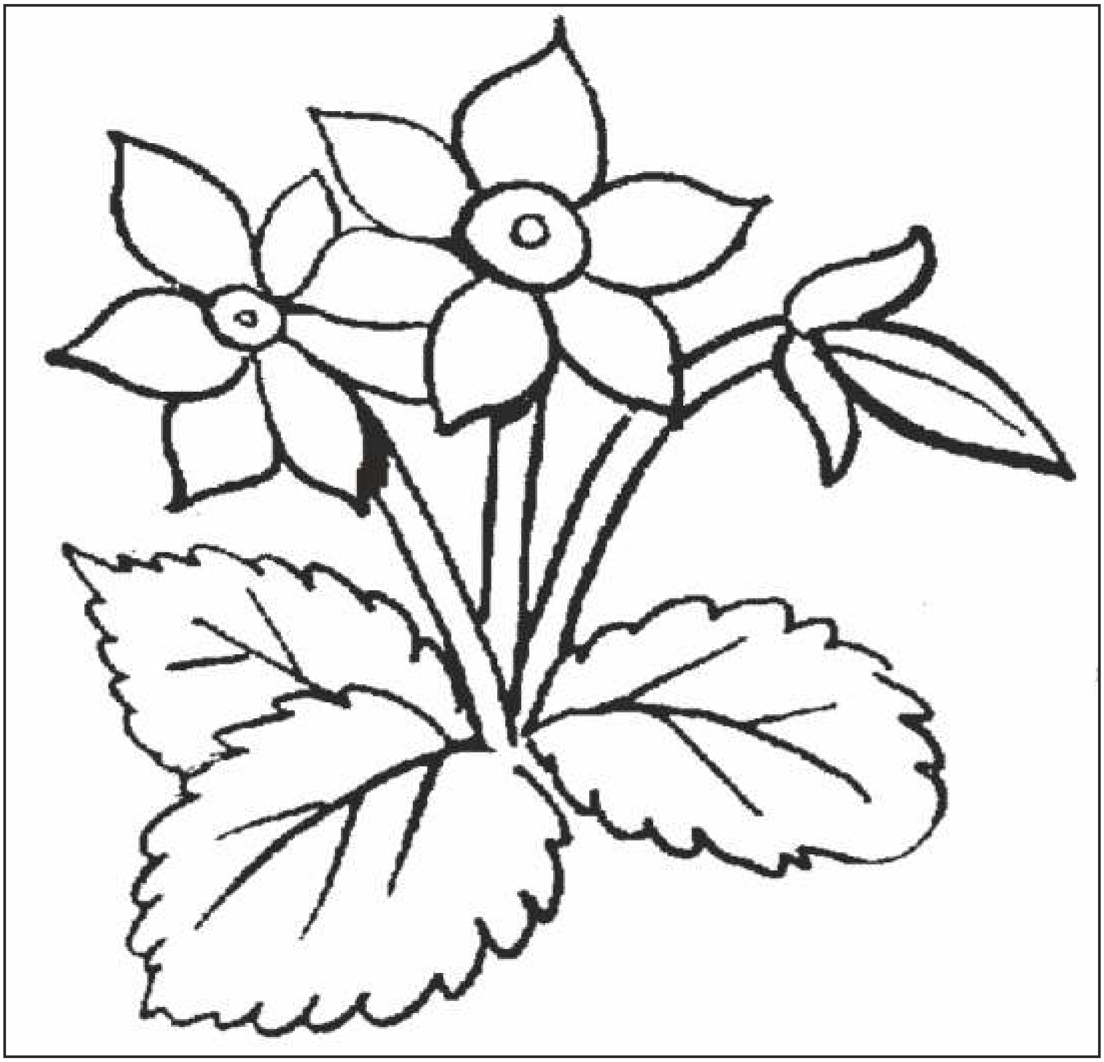

नाम .... आयु ....

पुत्र/पुत्री ....

पूरा पता ....

....

....पिन कोड ....

आपके पत्र

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ और मैं इसका बेसब्री से इन्तजार करती हूँ।

जुलाई 2017 अंक में 'बरसात का मौसम' (प्रमीला गुप्ता) तथा 'बन्दर की चतुराई' (किशोर डैनियल) कहानियां ज्ञानवर्द्धक एवं शिक्षाप्रद हैं।

'घिर आये बादल' (कल्पनाथ सिंह) और 'आमों का रस' (राजकुमार जैन) कविताएं भी अच्छी लगीं। स्तम्भों में 'पढ़ो और हँसो' 'सद्‌वाक्य' तथा 'विज्ञान प्रश्नोत्तरी' भी अच्छी लगीं।

लेख 'खूबसूरत घोंसला' (कमल जैन), अजब अनोखे टॉवर (किरण बाला), उत्तराखंड का राजकीय पशु : कस्तूरी मृग (डॉ. परशुराम शुक्ल) जानकारी से भरपूर है।

मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि यह पत्रिका दिन–दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करे।

हँसती दुनिया पढ़ते जाओ,
खुद हँसो और हँसाते जाओ।

– मधु रावत (ग्राम– चौरा)

मै हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है।

हँसती दुनिया में मैंने नवम्बर अंक में 'बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के अनमोल वचन', 'जाग्रत बनें' (सबसे पहले) और कविताओं में 'बगिया', 'फूल बहुत प्यारे होते हैं' तथा 'दादा जी' और 'किट्‌टी (चित्रकथाएं) ये सब पढ़कर मुझे बहुत अच्छा लगा। हँसती दुनिया के बारे में पाठकों को सन्देश है कि–

हँसती दुनिया को खूब पढ़ो,
जीवन में आगे बढ़ो।

–वैभव किशोर (डांगोली बांगर)

बसन्त ऋतु

फूलों का मौसम है आया,
हर ओर खिले हैं फूल हजार।
गली–गली और गाँव–गाँव में,
तितलियों की हुई मौज बहार।।

नदी–पहाड़ और ये झरने,
गरजकर अपनी खुशी मनाये।
वृक्षों ने भी ली अंगड़ाई,
हर ओर चली मदमस्त हवाएं।।

झूमता खिलखिलाता बसन्त,
लेकर आया मधुर उपहार।
पेड़–पौधे भी हँसते ऐसे,
मानो आया कोई त्योहार।।

नृत्य देख कर फूलों का,
भौंरों ने भरे रस के प्याले।
पीकर रस मधुर फूलों का,
हो गये ये सारे मतवाले।।

उड़ती तितलियां परियों जैसी,
धरती और नील गगन में।
बिखरी फूलों की खुशबू 'दीप',
खेत खलिहान और पवन में।।

– दीपक कुमार 'दीप' (मदनगीर, दिल्ली)

पुष्प प्रश्नावली के उत्तर

1. सूर्यमुखी, 2. गुलमोहर, 3. कमल, 4. अमलतास, 5. पंकज, 6. गुलाब, 7. धतूरे के फूलों से, 8. माखनलाल चतुर्वेदी, 9. नीदरलैंड का, 10. कमल, 11. पारिजात (हरसिंगार), 12. उत्तराखंड में।

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids
Spiritual Zone for kids
With the blessings of His Holiness Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.
kids.nirankari.org
His Holiness Message
Glimpse of Blessing
Message in colors
Poetry Fantasy
Wacky and True
Fun Games
Hansti Duniya
Kids Creation
Kids Activities
Jokes
Avtar Vani
Story Time
Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
: Licence No. U (DN)-23/2018-20
: Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011—47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 022-24102047

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road, Southend Circle,
Basavangudi, BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
EAST BARDHMAN—713101 (WB)
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)